॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द सरस्वती

# टंकारा समाचार

200 वां

( श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र )

नवम्बर, 2013 वर्ष 16, अंक 11
विक्रमी सम्वत् 2070
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष ( दिल्ली ) : 23360059, 23362110
दूरभाष ( टंकारा ) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

## हे ऋषिवर! तुम्हें मेरा शतबार प्रणाम

❒ अरूणा सतीजा ( टंकारा श्री )

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती को 130 वें महानिर्वाण दिवस के अवसर पर उन्हें शत शत नमन करती हुई श्रद्धापूर्वक श्रद्धा रूपी सुमन उन के चरणों में सादर समर्पित करती हूँ। भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि पुनः पुनः इस भारत की पावन धरती पर ऐसी परम पवित्र आत्माएं अवतरित होती रहें।

महर्षि के अनुसार वह ईश्वर इच्छा से इस धरती के आंचल में आये और ईश्वर इच्छा से उस परम पिता परमात्मा की ज्योति में विलीन हो गये। 30 अक्टूबर 1883 ई. सायं काल की गौ धूली बेला में स्वामी जी ने क्षौर कर्म कराया। बैठ कर ईश्वर का ध्यान किया वेदपाठ करने के पश्चात सब को अपने पीछे खड़ा कर प्राणायाम किया फिर करवट से लेकर यह शब्द बोले ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तू ने अच्छी लीला की'' एक महा दीपक, लाखों-लाखों लोगों के हृदय में वेदज्ञान की ज्योति जगा कर संसार को अलोकित कर सूर्य-अस्त के साथ सदा-सदा के लिये बुझ गया। महर्षि दयानन्द के निर्वाण के बाद जो दीप जले उन में आर्य समाज के प्रति बहुत तड़प थी। उन के निर्वाण ने नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। स्वामी जी की मृत्यु का दृश्य देख कर वह चिल्ला उठे। यह सत्य है कोई महान अदृश्य शक्ति है जिसे संसार के लोग परम पिता परमात्मा के नाम से जानते हैं। जिसे महर्षि ने उस का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। इसी 'ओ३म्' नाम का, महर्षि जन-जन को साक्षात्कार कराना चाहते थे ताकि घोर अन्धकार में भटक रही आत्माएं जीवन के सत्य-पथ पर चल सकें।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक कल्याण में आहूत कर दिया। राष्ट्र प्रेम के सामने उन्हें मोक्ष भी तुच्छ नजर आया। एक महन्त के कहने पर कि तुम 18-18 घण्टे की समाधि ले सकते हो तो मोक्ष के हकदार हो। स्वामी जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया जब मेरे देशवासी लाखों की संख्या में दारुणता के डंक को झेल रहे हैं तो मैं अकेला मोक्ष को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ।

> **महर्षि योगी राज, वेदज्ञ, अखण्ड ब्रह्मचारी, देश भक्त, निर्भीक, गुरु भक्त, परोपकारी, सत्यवादी तथा दयालुता की प्रतिमा थे महर्षि गुणों की खान थे, सद्गुणों ने उन्हें अपना निवास स्थान बना रखा था**

उन्होंने बताया कि जीवन का अन्तिम लक्ष्य मुक्ति है। मुक्ति या मोक्ष को प्राप्त करने के किसी कठोर तप तथा गृहस्थ को छोड़ने की आवश्यकता नहीं। मोक्ष का सम्बन्ध आत्मा से है न कि शरीर से। आत्मा की पवित्रता मोक्ष का मुख्य द्वार है जिसे गृहस्थ में रह कर भी प्राप्त किया जा सकता है। परोपकार की एक-एक सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। ईश्वर स्वयं भी तो हर पल यही 'कर्म' ही तो कर रहा है। वह अपना प्रतिबिम्ब हर मानव में देखना चाहता है।

मानव जीवन ईश्वर का दिया एक अनमोल उपहार। जिन्दगी को जीना सीखे। जिस को जीना आ गया उस का लोक तथा परलोक सुधार गया। यही जीवन कला तो, महर्षि समझाने व सिखलाने आये थे।

**'हे मानव एक दिन भी जी, अटल विश्वास बन कर जी**
**कल नहीं तू जिन्दगी का आज बन कर जी''**

इसी उद्देश्य से उन्होंने वेदों का पुन रुद्धार किया। वेदों की ओर लौट चलो का आह्वान किया।

वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना-सुनाना तथा आचरण करना सब आर्यों के लिये अनिवार्य बताया। समाज में व्याप्त सभी बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंका। देश को स्वराज्य का नारा दिया। नारी तथा अछूतों का उद्धार कर देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। संक्षेप में

( शेष पृष्ठ 21 पर )

## दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं महर्षि निर्वाणोत्सव का प्रेरणा सन्देश

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

# ऋषि जन्म भूमि टंकारा की प्रचार सामग्री का लोकार्पण
## श्री पूनम सूरी जी द्वारा

**(ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट एवम् प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)**

एक अत्यधिक सादगीपूर्ण कार्यक्रम में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाले ऋषि जन्मभूमि की प्रचार सामग्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की जाती है। जिसमें एक सन्देशवाहक पोस्टर (लेमिनेटेड), वर्ष 2014 का कैलेण्डर (स्वामी दयानन्द के चित्र सहित) एवम् वर्ष 2014 की टंकारा वैदिक दैनन्दिनी का उद्‌घाटन श्री पूनम सूरी जी के करकमलों द्वारा बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. के उपप्रधान एवं टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों की निर्देशिका श्रीमती नीशा पासिन, डी.ए.वी. सरकारी स्कूलों से मान्यता प्राप्त के निर्देशक श्री जे.पी. शूर, विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों की निर्देशिका श्रीमती काकड़ीया, कॉलेजों के निर्देशक श्री एस.के. शर्मा जी, प्रशासनिक अधिकारी/डायरेक्टर श्री ब्रि. अशोक अधलखा (सेवानिवृत) आदि उपस्थित थे।

# अब दोहरे शतक को छू लिया हमने

कई वर्षों से टंकारा ट्रस्ट इस बात को अपनी एक कमी मान रहा था कि टंकारा ट्रस्ट का प्रचार-प्रसार तो हो रहा है, परन्तु उसकी गतिविधियां ऋषि भक्तों तक नहीं पहुंच पा रही हैं। इसलिये अपना ऐसा कोई प्रचार का माध्यम बनाया जाये जिससे कि टंकारा ट्रस्ट की गतिविधियों को आम जनता तक पहुंचाया जा सके, इसके लिये प्रयास किये जा रहे थे। मार्च 1997 में गुजरात प्रान्त में आये सूखा के कारण जो विनाश हुआ, उसमें टंकारा ट्रस्ट द्वारा दिये गये अभूतपूर्व योगदान को लोगों तक पहुंचाने के लिये टंकारा समाचार का सराहनीय सहयोग रहा। मार्च 1997 से 4 पृष्ठों का टंकारा समाचार बिना किसी आर.एन.आई नम्बर के 200 प्रतियां प्रकाशित की गई। यह प्रक्रिया जून 1997 तक चली। परन्तु आज इसके सफल प्रकाशत के बाद पृष्ठ बढ़ाने के सुझाव आने लगे और सितम्बर 1997 में 500 प्रतियाँ 8 पृष्ठों की प्रकाशित हुई। अब विधिवत् सदस्य बढ़ाने का भी कार्य प्रारम्भ हुआ। 50/- रूपये वार्षिक शुल्क से सदस्य बनाए और 250/- रूपये पर आजीवन। आर.एन.आई नम्बर वर्ष 1998 में मिला और तब तक 1100 प्रतियाँ प्रकाशित होने लगी। इस कार्य के लिये ऋषि भक्तों से दान एकत्र करने ओर राहत कार्य की जानकारी लोगों तक पहुंचाने के लिये टंकारा समाचार एक माध्यम बना और अपनी पहचान बनाई। मुझे आर्य जगत् के कार्यालय में स्व. श्री क्षितीश वेदालंकार जी एवं स्व. श्री अशोक कौशिक के सान्निध्य में बैठकर प्रकाशन और पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त था, मैंने उन्हें लगभग 5 वर्ष तक अपनी सेवा इस कार्य हेतु दी थी। इसी कारण पिताजी ने मुझ पर विश्वास करते हुए इस कार्य का दायित्व मुझे दिया।

सितम्बर 1997 में प्रकाशित इस आठ पेज के परिपत्र को विधिवत् फरवरी 1998 में 'टंकारा समाचार' के नाम से आरम्भ किया गया। इसी दौरान किसी परिपक्व सम्पादक एवं विद्वान की खोज ट्रस्ट निरन्तर करता रहा और मैं स्वयं कामचलाऊ सम्पादक के रूप में अपनी सेवायें देता रहा। लगभग 8 मास तक टंकारा समाचार के प्रकाशन में जो प्रगति हुई और जो उत्साहवर्धक पत्र इत्यादि आने लगे, उससे मुझे कम से कम यह निश्चित होने लगा और आत्मविश्वास होने लगा कि मैं स्वयं अकेला भी पत्र प्रकाशित करने में सक्षम हूं। टंकारा ट्रस्ट भी इस बीच निरन्तर योग्य सम्पादक की तलाश करता रहा। 'टंकारा समाचार' के 12वें अंक तक इस पत्रिका की प्रशंसा लगभग सभी आर्य जनों के मुख पर थी और 'टंकारा समाचार' पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था।

इसी कड़ी में 1998 में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर बोध ांक का प्रकाशन किया गया और निरन्तर तभी से कड़ी दर कड़ी अंकों की झड़ी लगती गई और मैं 'टंकारा समाचार' का विधिवत् सम्पादक बन गया। टंकारा समाचार को प्रकाशित करने हेतु एवं सम्पादकीय लिखने हेतु सामग्री एकत्र करने के लिये लालसा बढ़ती गई और स्वाध्याय का एक शौक मन में लग गया, पुस्तकें क्रय की और धीरे-धीरे लगभग 500 से अधिक पुस्तकों का एक छोटा वाचनालय घर पर ही तैयार हो गया। (अब लगभग 1500 पुस्तको का) व्यवसाय से बैंक प्रबंधक होने के कारण और समयाभाव के रहते सम्पादकीय कार्यालय घर के प्रथम तल पर ही बनाना पड़ा और वहीं से कार्य करने लगा।

इस 200वें अंक तक के सफल सम्पादन के लिए आज स्मरण हो आती है-स्व. श्री क्षितीश वेदालंकार जी की, जिन्होंने मुझे लेखनी उठाने के लिये प्रथम अवसर प्रदान किया था, उसी काल में आर्य-जगत् साप्ताहिक में मेरे कई लेख भी प्रकाशित हुए। उनकी सम्पादकीय कार्यशैली से मैं बड़ा ही प्रभावित था। वह मेरी त्रुटियों को निर्देशित करते और मैं निरन्तर लेख आदि लिखता रहा। इसी अवसर पर अपने विचारों को प्रभावी ढंग से किस प्रकार शब्दों में उतारना है की प्रेरणा मुझे कालान्तर में स्व. श्री अशोक कौशिक जी द्वारा प्राप्त होती रही। उपरोक्त दोनों महानुभावों से मैं अपने लेखन-कार्य में अत्यधिक प्रभावित रहा हूँ। मैं यहां साधुवाद देना चाहूंगा आर्य जगत् के विद्वानों एवं लेखकों को जिन्होंने मुझे मेरे 200वें अंक तक की यात्रा में निरन्तर अपने लेखों एवं सुझावों से पत्रिका को सुशोभित करने में योगदान दिया।

मैं यहां विशेषकर श्री देवनारायण भारद्वाज, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. महेश वेदालंकार, श्री खुशहालचन्द्र आर्य, डॉ. श्यामसिंह शशि, डॉ. भवानीलाल भारतीय, स्व. पं. मनुदेव अभय, श्री यशपाल यश, श्री अर्जुनदेव स्नातक, प्रो. वेद साहनी, श्रीमती राजकरनी अरोडा, श्रीमती अरुणा सतीजा, पं. रमेशचन्द्र मेहता, श्री हरिओम शास्त्री, श्री वरुणमुनि वानप्रस्थ, पं. मनोहर शास्त्री, श्री महेश बी. शर्मा, श्री ईश्वरचन्द माथुर, स्व. श्री विश्वनाथ, प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, श्री ओम प्रकाश बजाज, श्री नरेन्द्र आहुजा आदि महानुभावों को साधुवाद देना चाहता हूं जिनके सहयोग एवं योगदान से मैं इन 200 अंकों की दौड़ को पूर्ण कर सका हूँ। इसी के साथ 'समाचार' के प्रकाशक श्री राकेश भार्गव का विशेष धन्यवाद करना चाहूंगा, जिनके सहयोग के बिना इस मंजिल को प्राप्त करना सम्भव नहीं था।

इसी अवसर पर मैं उन सभी पाठकों का भी धन्यवाद करना चाहूंगा जिन्होंने मुझमें आस्था रखते हुए मुझे प्रोत्साहित करते हुए समय-समय पर सहयोग तो किया ही, अपने बहुमूल्य सुझावों से भी अवगत कराया। इन्हीं महानुभावों के सहयोग के कारण 'अजय सहगल' से 'अजय' बना और अब 'अजय टंकारा वाला'। मैं उस परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूं जिसकी असीम कृपा से 'टंकारा समाचार' के सफल सम्पादन में सक्षम हो सका हूं। आज टंकारा समाचार आर्यसमाज के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र है।

**अजय** टंकारावाला

**तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।**
**वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।**
**बलमसि बलं मयि धेहि।**
**ओजोऽस्योजो मयि धेहि।**
**मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।**
**सहोऽसि सहो मयि धेहि।**

**हे प्रभो! तुम तेजस्वरूप हो, मुझे भी तेजस्वी बनाओ। तुम वीर्यवान् हो, मुझे भी वीर बनाओ। तुम बलधारी हो, मुझे भी बलवान् बनाओ। तुम ओजस्वरूप हो, मुझे भी ओजस्वी बनाओ। तुम मन्युस्वरूप हो, मुझे भी सात्विक क्रोध दो। तुम सहिष्णु हो, मुझे भी सहिष्णु बनाओ।**

# क्या ईश्वर हम से रूठ गए हैं?

❑ रमेश चन्द्र पाहुजा

हम सभी भली भाँति जानते हैं कि सृष्टि के आदिकाल से ही उस दयालु ईश्वर ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के माध्यम से क्रमशः हमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान प्रदान किया। इन वेदों में परा और अपरा दोनों विद्याओं का ज्ञान बीजरूप में उपलब्ध है। वेदों का एक-एक मन्त्र बहुमूल्य हीरे मोतियों से जड़ा हुआ है, अपने आप में वरदान है, कई रहस्यों से परिपूर्ण है। महर्षि पतञ्जलि जी का कथन है कि वेद मन्त्र का तो कहना ही क्या, उसका एक-एक शब्द ही अमूल्य है।

**''एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गलोके कामधुक् भवति।''**

यदि हमें एक शब्द का भी भली भाँति, यथा संगत ज्ञान हो जाये और हम उसे अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारी सब शुभ-कामनाएँ और मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा भी पूर्ण हो जाये। यदि हम वेद-मन्त्र के रहस्यों को, तत्त्व-ज्ञान को पूर्णतः समझना चाहते हैं तो हमें अपने स्तर को ऋषि के स्तर पर ले जाना होगा, अन्तर्मुखी होते हुए चिन्तन, मनन, निदिध्यासन करना होगा। ऐसा करना कहाँ तक सम्भव है? परन्तु 'जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।' जितना-जितना हमारा विवेक, वैराग्य, अभ्यास बढ़ता जायेगा, आध्यात्मिक स्तर ऊँचा होता जायेगा, हम वेद-मन्त्र की गहराई में उतरते जायेंगे। ऋग्वेद का एक ऐसा ही सारगर्भित मन्त्र साधक के मन को भाव-विभोर कर रहा है, वेद रूपी बगिया का एक सुन्दर फूल अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और साधक गहन चिन्तन में खो जाता है। वह मन्त्र इस प्रकार से है:

**ओ३म् तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते।**
**यत् ओहते वरूणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः॥** ऋग्वेद 7.66.12

मन्त्र के प्रथम चरण में वेदमाता आदेश दे रही है ऐ साधक, तुम आज ही ब्रह्म-मुहूर्त में, सूर्य देवता के उदय होने के समय उस परमपिता परमात्मा को वेद-मन्त्रों के द्वारा मना लो। अब प्रश्न उठता है कि क्या ईश्वर भी रूठ जाया करता है? अरे हमने तो सुना था, जाना था कि ईश्वर तो सदैव समभाव में रहता है, समरस है। कोई उसका सिमरन करे या न करे, वेद-प्रशस्त मार्ग पर चले या न चले, इन सबसे उसकी समता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वह किसी से भी, चाहे वह आस्तिक हो या नास्तिक कोई भेद-भाव, राग-द्वेष नहीं करता। उसके द्वारा प्रदत्त सृष्टि की सारी नेमतें, जैसे सूर्य की धूप, वायु, जल आदि सबके लिए एक समान है। इतना ही नहीं सब जीवों को सत्य पथ पर चलने के लिए समान रूप से प्रेरित करता है। ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना तो हम अपने ही कल्याण के लिए करते हैं, उसके गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करते हुए प्राप्त करने के लिए, न कि उसे प्रसन्न करने के लिए।

परन्तु प्रश्न तो वहीं का वहीं खड़ा है। वेदमाता तो कह रही है कि उसे सूर्य के उदय होते ही मना लो। आईये, अपने चिन्तन को आगे बढ़ाते हुए विचार करते हैं कि इस संसार में कोई कैसे रूठता है। इस जगत में दो प्रकार के मनुष्य हैं। सज्जन और दुर्जन। दोनों के रूठने में बहुत अन्तर है। जब एक दुर्जन व्यक्ति रूठ जाता है तो उससे केवल अनिष्ट और हानि की ही संभावना हो सकती है, न जाने कब क्या कर बैठे, यहीं शंका रहती है। उसके रूठने से कोप भवन जैसे दृश्य ही नजर आते हैं। कैकेयी के रूठने से क्या का क्या हो गया? परन्तु एक सज्जन के रूठने से किसी का अहित नहीं होता क्योंकि उसके हृदय में सदैव ''सर्वे भवन्तु सुखिनः......'' की भावना समाई रहती है। उसका रूठना तो एक माँ के रूठने जैसा होता है जिसके हृदय में बेटे के लिए सदैव प्यार, ममता और आशीर्वाद ही होता है। वह उसके साथ दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में, उसकी देखभाल में कमी नहीं आने देती। माँ के रूठने का तो केवल एकमात्र यही कारण होता है कि उसका पुत्र उसकी आज्ञायों का पालन न कर अपने सुपथ से भटक गया होता है। माँ के रूठने का आभास तभी होता है जब पुत्र उससे कोई सुझाव माँगता है तो वह कह उठती है 'जाओ! मुझे कुछ नहीं पता, जो तेरे मन में आये वह करो, अब तुम बहुत बड़े हो गये हो।'

इसी प्रकार से जब हम वेद-मार्ग पर न चल, अपने अन्तिम लक्ष्य से भटक जाते हैं तो परम-पिता परमात्मा हमसे रूठ जाता है। हम कैसे जानें कि ईश्वर हमसे रूठ गया है? **स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास** के माध्यम से हमें सन्देश देते हैं' जब आत्मा मन को और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के करने का विचार जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्द उत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।'' ऐसा आभास सारी मानव-जाति के लिए एक समान है। यदि किसी व्यक्ति विशेष को ऐसा आभास नहीं होता तो वह जान ले कि ईश्वर उससे रूठ गया है। व्यवहारिक शब्दों में हम कह उठते हैं कि उसकी आत्मा मर गई है, जो ईश्वर की आवाज को नहीं सुनती जबकि हम भली-भांति जानते हैं कि आत्मा तो अनिलम है, अमृतम् है। क्या रूठा हुआ ईश्वर मान जायेगा? क्यों नहीं? वेद-मन्त्र का दूसरा चरण कह रहा है कि वह तो हमारा मित्र है, मार्गदर्शक, न्यायकारी है। कब तक एक मित्र दूसरे मित्र से रूठा रहेगा? आवश्यकता है तो उसे पवित्र हृदय से मनाने की। वह ठहरा सर्वव्यापक सर्व-अन्तर्यामी। उसके आगे हमारा कोई दाव-पेंच, छल-कपट नहीं चलेगा। उसे मनाने का एक ही उपाय है और वह है उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हुए पूर्ण-रूपेण उसके प्रति समर्पित हो जाना, उसे वर लेना और उसकी आज्ञायों का पालन करना। उसकी आज्ञायों का पालन करना ही उसके प्रति समर्पित होने की एक सीढ़ी है।

आइए हम अपना ही परीक्षण निरीक्षण करते हैं। क्या हम ईश्वर की आज्ञायों का पालन कर रहे हैं? ईश्वर तो आदेश देता है

**'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।'**

अर्थात् हे मनुष्य जो उपभोग सामग्री तुझे दी गई है उसका त्यागपूर्वक सेवन कर। जो कुछ तुझे प्राप्त हुआ है, उसमें से यज्ञ का भाग निकालकर जो यज्ञ-शेष बचे उसका ही भोग कर। दूसरे को दिये गये धन पर लालच की दृष्टि से मत देख। यह धन किसी का नहीं है।

अब देखिये निम्नलिखित वेद-मन्त्र में ईश्वर की क्या आज्ञा है?

**'स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।**
**आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।**
**मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकं॥** अथर्ववेद॥

इस मन्त्र के अन्तिम चरण में वेद भगवान कह रहे हैं यदि तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति करनी है तो मेरे द्वारा दिये सातों वरदान उपभोग करने के उपरानत मुझे ही अर्पित कर दो। इन पर स्वामित्व की भावना मत रख। ये तो केवल तुम्हें तुम्हारा शरीर रूपी रथ चलाने के लिए दिये गये हैं जैसे ही हम ईश्वर की आज्ञायों का पालन करते हुए उसके प्रति समर्पित हो जायेंगे, हमारा रूठा हुआ सखा मान जायेगा। हमें सत्य मार्ग की ओर प्रेरित करेगा और हमें अपने अन्तःकरण में उसकी आवाज सुनाई देने लगेगी। हमारा जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा।

-541-एल, मॉडल टाऊन, यमुना नगर

# सत्य, न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द सरस्वती

❐ प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

स्वामी दयानन्द का जन्म फाल्गुनी कृष्णा दशमी सं १८८१ वि. सन १८२५ ई. को सौराष्ट्र (गुजरात) टंकारा, मौरवी में हुआ था। इनके पिताजी सामवेदी ब्राह्मण थे। वे निष्ठावान शिव भगवान् के भक्त थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम "मूलशंकर" रखा था। मूलशंकर को यजुर्वेद की रूद्राध्यायी कंठस्थ करा दी थी। कर्षण जी अपने पुत्र मूलशंकर ने १४ वर्ष की आयु में पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ शिवरात्रि का व्रत किया। रात्रि जागरण का विशेष फलदायक महत्व है। निद्रा देवी ने सबको दबा लिया। सिर्फ मूलशंकर पूरी श्रद्धा भक्ति से जागते रहे। इतने में दो-चार चूहे पिंडी पर अर्पित सामग्री को खाने लगे। मूलशंकर के हृदय में प्रभु-कृपा से सत्य का प्रकाश हुआ। उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि यह पिण्डी भगवान् शंकर नहीं हो सकती। सत्य के प्रति आग्रही मूलशंकर घर आ गये। सत्य के प्रति यह परम दुर्दान्त आग्रह स्वामी दयानन्द से संपूर्ण जीवन में बड़ी दृढ़ता से बना रहा।

स्वामी दयानन्द ने अपने युगान्तरकारी कालयजी ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" की भूमिका में लिखा है "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेहारा है, तथापि प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुका जाता है" स्वामीजी ने वहीं भूमिका में पुनः लिखा है- "विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनंद में रहें, "वहीं पुनः लिखते हैं- "यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरूद्ध बातें हैं, उनका त्याग परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकाविधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है" यह उद्धरण किसी समीक्षा या व्याख्या की आकांक्षा नहीं करते।

स्वामी दयानन्द सत्य के प्रति इतने अग्रहवान थे कि उन्होंने आर्य समाज का चौथा नियम यह बनाया कि "सत्य के ग्रहण करने और असाय को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" स्वामी जी ने पुनः पांचवे नियम में यह व्यवस्था दी है कि "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।"

सत्य और न्याय एक-दूसरे के साथी हैं, जहाँ सत्य का पालन होगा वहां न्याय स्वतः होता रहेगा। जिस युग में स्वामीजी ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया उस समय कई प्रकार के अन्याय समाज में परिवारों में प्रचलित हो गए थे। सामाजिक रूप में छुआ-छूत भयानक रूप से चल रहा था। परिवारों में स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उनके साथ प्रायः दासियों जैसा व्यवहार होता था। स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। स्वामी दयानन्द ने बड़े क्षोभ और उग्रता से इस अन्याय का विरोध किया। लड़कियों के लिए पाठशाला की व्यवस्था की और अछूतों के लिए छुआ-छूत के भेद भाव दूर कर दिए और उनके लिए भी पढ़ने की व्यवस्था की।

उस युग में बाल-विवाह बहुत प्रचलित था। आठ-दस वर्ष की लड़कियां भी बूढ़ों और अधेड़ों को ब्याह दी जाती थीं। विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और विधवा-विवाह धर्म-विरूद्ध माना जाता था। ये बाल-विधवाएं या तो वेश्या बन जाती थीं या देवदासियां बन जाती थीं। स्वामी दयानन्द ने इन सभी अन्यायों का डटकर विरोध किया। आर्य समाज ने अपने मंदिरों से छुआ-छूत को हटाया और बाल-विवाह के विरूद्ध सामाजिक आन्दोलन किया। हिन्दू समाज में विधवा विवाह आरम्भ हो गया। प्रत्येक आर्य समाज के विद्यालयों और छात्रावासों में बिना किसी रोक-टोक के खुल गयीं। अछूतों को आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सामाजिक बहिष्कार का दण्ड भी भोगना पड़ा किन्तु स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के फलस्वरूप ये सामाजिक आन्दोलन बढ़ता ही गया और छुआ-छूत मिटने लगा तथा स्त्रियों को भी पुरूषों की तरह सामाजिक अधिकार मिलने लगे। उन्हें सब प्रकार से उन्नति का अवसर सुलभ हो गया।

संस्कृत और हिंदी की शिक्षा की बड़ी उपेक्षा हो रही थी। संपन्न लोग उर्दू और फारसी पढ़ रहे थे। स्वामी दयानन्द ने अपने संगठन में सारे कामों की हिंदी में करने का अनिवार्य नियम बना दिया।

स्वामी दयानन्द के इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि अछूत कुलों के विद्यार्थी भी बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य, वेदपाठी, अध्यापक बनाने लगे और बिना किसी भेद-भाव के पण्डितों की मण्डली में प्रतिष्ठित होने लगे। स्त्रियाँ भी संस्कृत और वेद की उच्चकोटि की विदुषी बनने लगीं वर्तमान में राजनीतिक दलों ने अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण स्वामी जी की छुआ छूत जातिवाद को समाप्त करने की भावना को खत्म करने को खूब बढ़ावा दिया। अब तो ऐसा लगने लगा है कि अछूत जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सभी को राष्ट्र की एकता के विभाजन का राष्ट्रघाती पुरस्कार मिलने लगा है और स्वार्थी राजनीति इन्हें चिरस्थायी करने पर तुली हुई है, स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी की तरह राष्ट्र-हितैषी छुआ-छूत को दूर करने की नीति को ही राजनीति ने निर्ममता से समाप्त कर दिया है।

वेदों को अपनाने का सिद्धांत: स्वामी दयानन्द का सुविचारित निश्चय था कि जब तक भारतवर्ष ने वेदों की शिक्षा को अपने राष्ट्रीय जीवन में अपना रखा था, तब तक देश की सर्वांगीण उन्नति हुई और देश संसार के सभी देशों का शिरोमणि बना रहा, स्वामी जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम ही बना दिया- "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" वेदों को अपनाने के अनेकों कारण थे। वेद पुरूषार्थ और कर्मण्यता का उपदेश देते हैं, भाग्य, नियति का विरोध करते हैं- "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेत्"- यावत् जीवन कर्म करते हुये जीने की इच्छा करो। परमेश्वर ने मानवयोनि को उन्नति करने तथा दक्षता प्राप्त करने के लिए बनाया है- "उद्यानम् ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि" - वेद कर्म न करने वालों को, कामचोर, दस्यु कहता है, ऐसे परजीवियों, पैरासाइटों को दण्ड देने का आदेश देता है- "अकर्मा दस्युः बधीः दस्युं"। परमेश्वर ने मनुष्य को उचित, अनुचित परखने की शक्ति दी है वेद कहते हैं- अश्रधां अनृते दधात्, श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः"। वेदों में पाप क्षमा का सिद्धांत नहीं है, पाप या पुण्य, सबका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है- "अवश्यमेव भोक्तव्यम्

कृतं कर्म शुभाशुभं"। वेदों में सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति का परिपूर्ण उपदेश हुआ है। वेद में कृषि, वाणिज्य, उद्योग, सबकी शिक्षा है। वेद में सब विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों में पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष और घुलोक पर्यन्त सब ज्ञान का परिपूर्ण वर्णन है। वेद में स्वराज्य की बड़ी महिमा है। अनेक मन्त्रों में "अर्चन्ननु स्वराज्यम्" का सम्पुट हुआ है। वेद में प्रखर राष्ट्रवाद की महिमा का वर्णन है। प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र में सब प्रकार के विद्वान, योद्धा, विदुषी स्त्रियाँ और बलवान गाय, घोड़े, पशु आदि हों। वेद में मातृभूमि की बड़ी उत्कृष्ट भावना विद्यमान है। अथर्ववेद के भूमिसूक्त में कहा गया है-**"माता भूमिः, पुत्रोऽहम् पृथिव्याः"**। मातृभूमि की यह प्राचीनतम प्रतिष्ठा है। वेद में विश्व-सरकार और विश्व-नागरिक का भी वर्णन है। वेद में विश्वनागरिक को "विश्वमानुष" कहा गया है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी अधिक उत्कृष्ट व्यवस्था में पायी जाती है।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए भी सत्य, न्याय और वेद का प्रचार किया। मानव जाति के कल्याण में ही उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर दिया। सत्य की रक्षा के लिए ही उन्हें धोखे से विषपान कराया गया और १८८३ ई. में दिवाली की संध्या को उनका देहांत हो गया। ऐसे महात्मा का पुण्य स्मरण भी सौभाग्य है।

पी-३०, कालिन्दी हाउजिंग स्कीम, कोलकाता- ७०००८९

# वेद-ज्ञान ही सार्थक है

❐ हरेन्द्र राय

मानव जीवन अत्यन्त ही दुर्लभ है। संसार में जितनी भी योनियाँ हैं, अपने-अपने कर्मों को भोगने में लिप्त हैं। कर्मों का फल अवश्य मिलता है। मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है, जो मनुष्य सत्य का मार्ग-अनुसरण करते हैं उनका जीवन सफल हो जाता है। सदा-सदा के लिए जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। विवेकशील प्राणी संसार-तत्व को समझकर 'वेद-ज्ञान' द्वारा अपने जीवन-निर्माण को सफल बना लेते हैं। वह लोग विद्या और अविद्या के स्वरूप को भलीभाँति समझकर कर्मोपासना द्वारा मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् ज्ञान से मोक्षगामी हो जाते है। संसार के बन्धनों से रहित हो जाते हैं इस प्रकार नाना-नाना प्रकार से बार-बार जीवन-मरण नहीं होता है। वह सदा के लिए परमपिता परमात्मा में लीन होकर मोक्षगति प्रदान करता है।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के नवम समुल्लास में स्पष्ट किया है-अर्थात् "वेत्ति यथावत तत्त्वं पदार्थ-स्वरूप-यया सा विद्या, यथा तत्व स्वरूपं न जानति भ्रमादन्यस्मिन्नन्यन्निश्चिनोति साऽविद्या" अर्थात् जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या कहाती है। और जिसमें तत्त्वस्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है।

स्वामी जी ने स्पष्ट किया है, कि कर्म और उपासना अविद्या इस कारण है, कि बाह्य और अन्तर क्रिया विशेष है, ज्ञान विशेष नहीं है। अर्थात् स्पष्ट है, कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं हो सकता अर्थात् अपवित्र कर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से ही बन्ध होता है कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता इसलिए धर्मयुक्त सत्यभाषणद कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।

वेदों में 'सत्यज्ञान' प्राप्त होता है। वेद 'विद्या' ज्ञान का स्रोत है। वेदों में ज्ञान और विज्ञान दोनों ही मिलते हैं। विद्या 2 प्रकार से बतायी गयी है। योग सामग्री की प्राप्ति करने का जो साधन है वह 'अपरा' विद्या कहलाती है। जिनमें चारों वेद और छः वेदाङ्ग सम्मिलित हैं। हमारे जीवन में 16 संस्कारों का प्रयोजन 'स्वामी दयानन्द' ने स्पष्ट किया। हमारे सारे संस्कार 'यज्ञो' से जुड़े है। सारांशः जो ज्ञान हमें या जिनके द्वारा सार-तत्व का 'ज्ञान' प्राप्त होता है। वही 'परा' विद्या है।

वेद स्पष्ट करते हैं, कि मानव जीवन को सदा सत्य मार्ग में प्रशस्त करते हुए जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। इस मार्ग द्वारा मानव दुःखों से निवृत्ति लेकर सुखद जीवन धारण कर लेता है। वेद में 2 प्रकार के सुखों का वर्णन मिलता है-प्रथम प्रेय-अर्थात् इहलोक और जितनी प्राकृत सुखभोग सामग्रियाँ हैं, पुत्र, स्त्री, मकान, धन एवं पशु आदि की प्राप्तियाँ हैं, अधिकांश मानव इन प्रेय सामग्री पाकर भोगों में तत्काल सुख के कारण फँस जाते हैं। वास्तविक जीवन के लक्ष्य को भूलकर परमात्मा से दूर हो जाते हैं और शीघ्र ही अपना ध्येय गवां देते हैं। दूसरा ''श्रेय'' है जो सदैव सत्यज्ञान की ओर अग्रसर होकर सारतत्व के लिए परमपिता-परमात्मा का ध्यान करते हुए अपने परम कर्त्तव्यों का निर्वहन कराते हैं, वह व्यक्ति शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। उनका जीवन सहज ही सार्थक बन जाता है। जोकि जीवन का परम उद्देश्य है। वेदमंत्र में स्पष्ट है, कि -

**यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त**

अर्थात् जिस सांसारिक सुख दुःख से रहित नित्यानन्द युक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्षप्राप्त होके विद्वान लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते है। हमें सदा उसकी विशेष भक्ति से ओत प्रोत रहना चाहिए।

- 2/71, नामनेरः आगरा-282001

## टंकारा में आगामी बोधोत्सव 2014

**आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 26, 27, 28 फरवरी 2014 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप उक्त तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।**

**- रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री**

# सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उपयोगी अंश

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

डॉ. भवानी लाल जी भारतीय ने दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली नामक पुस्तक लिखी है। इसको मैंने आदि से अन्त तक अच्छी प्रकार पढ़ा है। पुस्तक अति उत्तम है। मैं यह समझता हूँ कि भारतीय जी ने इस पुस्तक को लिख कर केवल आर्य समाजियों का ही नहीं बलिक पूरे मानव समाज का उपकार किया है। इसमें भारतीय जी ने महर्षि दयानन्द कृत लगभग सभी ग्रन्थों का सार संक्षिप्त में लिखा है। साथ ही इस ग्रन्थ की उत्तमता इसलिए और अधिक बढ़ जाती है कि इसमें पुस्तकों के अतिरिक्त पूना में दिये पन्द्रह प्रवचन, मुम्बई प्रवचन तथा कुछ शस्त्रार्थो का भी वर्णन है जिससे पुस्तक रोचक बन गई है। मैंने इस लेख में सत्यार्थप्रकाश के कुछ उपयोगी अंशों का उल्लेख किया है, कृपया पाठकगण इनसे लाभ उठावें।

**1. आत्मा का स्वभाव-** मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

**2. महर्षि की प्रतिज्ञा-** यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूँ और वसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथार्थ प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा अन्य मतों वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी। मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती हो तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन के बाहर हैं।

**3. सर्वशक्तिमान का अर्थ-**सर्वशक्तिमान, शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य, पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किचिंत भी किसी की सहायता नहीं लेता।

**4. प्रार्थना और पुरुषार्थ-** जो मनुष्य जिस बात के लिए प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे तब उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अपने पुरुषार्थ के बाद यदि वह वस्तु नहीं मिलती है तब ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

**5. यदा यदा हि धर्मस्य का अर्थ-** श्री कृष्ण धर्मात्मा लोगों की और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ। क्योंकि 'परोपकाराय सतांविभूतयः परोपकार के लिए सन्तपुरुषों का तन, मन, धन होता है। तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

**6. आर्य ही, आर्या वर्त के मूल निवासी हैं:** किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में कही नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से या मध्य एशिया से आये और यहां के जंगली लोगों से लड़कर, विजय प्राप्त करके इस देश के राजा हुए। आर्यो के आने से पहले इस देश का नाम क्या था, कोई नहीं बतला सकता तब विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

**7. स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता है-** कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वही सर्वोपरि व उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य, चाहे कितना भी पक्षपात् शून्य, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा न्याय और दया रखने वाला हो, तब भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

**8. जन्म और मरण क्या है-** जब शरीर से जीव निकलता है, उसी का नाम मृत्यु और शरीर के साथ संयोग होने का नाम जन्म है। जब जीव, शरीर छोड़ कर कुछ समय के लिए यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है, तत्पश्चात ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जीव, माता के गर्भ में जाता है। यम नाम वायु का है। गरूड़ पुराण का कल्पित यम नहीं है।

**9. स्वर्ग और नरक क्या है:-** सुख, विशेष का नाम स्वर्ग और विषय, तृष्णा में फंसकर दु:ख विशेष पाने का नाम नरक कहलाता है। जो संसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो योग-साधना तथा अच्छे कर्मो द्वारा जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग या मोक्ष कहलाता है।

**10. हमारी पराधीनता के कारण-** विदेशियों का आर्यवर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, जन्म से जाति यानि वर्ण मानना, कर्म से नहीं बाल्यावास्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का प्रचार में न होना आदि हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

**11. गोवध से हानि-** जब आर्यो का राज्य था, तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त वा अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी बर्तते थे। जबसे विदेशी, मांसाहारी इस देश में आकर गौर आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यो के दु:ख की बढ़ती होती जाती है।

**12. मनुष्य कौन होता है-** मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने पूर्ण सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे, चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहां तक अन्याय कारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना भी दारूण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावे, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे।

**13. वैदिक धर्म सबसे प्राचीन-** यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्त्र वर्षो के पूर्व वैदिक धर्म से भिन्न दूसरा कोई भी धर्म न था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या अविरूद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। वेदों की अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रम-युक्त होकर, जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। जिससे मानव-मात्र की बड़ी हानि हुई।

**14. वेदोक्त धर्म से मानवता का हित–**महाभारत से पूर्व सर्व भूगोल में एक ही वेदोक्त धर्म था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख–दुःख, हानि–लाभ आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मत वाले होने से बहुत दुःख और विरोध बढ़ गया है। इसका निवारण करना बुद्धिमानों का काम है।

**15. आर्यों के पतन का कारण–** स्वयंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी अविद्वान, लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक हो जाता है, तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या–द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या–सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्टव्यसन बढ़ जाते हैं।

**16. महाभारत से हानि–**जब बड़े–बड़े विद्वान, राजा–महाराजा, ऋषि–महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से तो मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वैदिक धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या, द्वेष अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा। इस प्रकार सर्वत्र आर्यावर्त देश खण्ड–खण्ड राज्यों में बंट गया।

**17. सार्वभौम मानवीय एकता कैसे हो–**जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तरों का होना नहीं छूटेगा, तब तक लोगों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह वैदिक धर्म के मानने से ही सम्भव है। गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड

# दीपावली यूँ मनाएँ

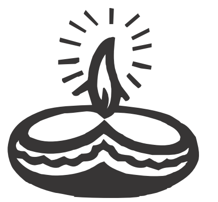

आओ मिलकर दीप जलाएँ, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
अपने घर का दीप जलाकर, सबके घर का दीप जलाऐं।।

दूर करें अंधियारा सारा, जगमग जग होवे उजियारा।
सकल विश्व को आर्य बनाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

लेकर मन में खुशियां सारे, युवा वृद्ध सब बच्चे वारे।
नाचें गाऐं झूम मचाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

खेलें ऐसे खेल निराले, जिससे हों उज्ज्वल मन काले,
जुआ ताश पर रोक लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

बम पटाखे कभी न फोड़ें, बुरी आदतें सारी छोड़ें,
मिलकर सबको गले लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

व्यर्थ न फेंकें रूपए पैसे, देवें जिसके पास न पैसे,
सेवा कर दुःख दर्द मिटाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

गौ सेवा कर वृद्धि करें हम, उन्नति और समृद्धि करें हम,
गौ हत्या पर रोक लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

याद करें ये सूत्र निराले, पीकर ओ३म् नाम के प्याले
ऋषि दयानन्द निर्वाण मानाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

**विमलेश बंसल 'आर्या',** 329, द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश–65

जो मनुष्य किसी की उन्नति की केवल इच्छा ही नहीं करते है किन्तु सभी के ऐश्वर्य को बढ़ाने की इच्छा करते हैं वे सूर्य के समान उपकार करने वाले होते हैं, धर्मात्मा होते हैं। अर्थात सूर्य संसार को प्रकाश देता है बदले में कुछ लेता नहीं हैं। **– स्वामी दयानन्द**

# SIMPLE RULES OF HEALTH WATER

Well, Water is the most essential element, next to air, to our survival. Water makes up more than two thirds of the weight of the human body, and without it. we would die in few days. The human brain is made up of 80% water, blood is 82% and lungs 90%. A mere 2% drop in our body`s water supply can trigger signs of dehydration:Mild dehydration is also one of the most common causes of daytime fatigue. Water is important to the mechanics of the human body. The body cannot work without it, just as a car cannot run without gas and oil. In fact, all the cell and organ functions made up in our entire anatomy and physiology depend on water for their functioning.

It is stated that the human body requires at least 8 glasses or 2 litres of water a day and these are just some of the Top Reasons Why....... **1. Healthy Heart:** Drinking a good amount of water could lower your risk of a heart attack. **2. Energy Booster:** Being dehydrated can sap you energy and make you feel tired and this can lead to fatigue, muscle weakness, dizziness and other symptoms. **3. Headache Cure:** Another sign of dehydration is headaches. Often It is simply a matter of not drinking enough water. **4. Healthy Skin:** Drinking water can clear up your skin and people often report a healthy glow after drinking water.

**BUY AS MUCH YOU NEED, COOK AS MUCH YOU WOULD CONSUME**

**Saving those precious drops**

* Left over 20 grams of rice, cereals and pulses each in a thali means a loss of around 60 litres- a person`s average daily need of water (calculated from the time of cultivation to end usage)
* Half a banana (around 10 grams) thrown in a dustbin is a loss of eight litres of water.
* An apple you wastage (weighing about 200 grams) means a loss of 164 litres of water and 50 grams of chemicals used in producing it.
* Five tomatoes going waste in your fridge means a loss of 200 litres of water.
* Around half of the fresh water generated every year is used to produce food.
* The per capita availability of water in India in 2011 was 1,700 cubic meters, which is expected to fall to 1,000 cubic meter by 2050.

# आर्यसमाज की व्यापकता

❒ सोनालाल नेमधारी

आर्यसमाज का नाम आते ही विचार दौड़ जाता है। उसका क्षेत्रफल नापने लगता है। अन्तहीन क्षेत्रफल ही नजर आता है। कारण क्या है। यह सच्चाई का मार्ग, विश्व कल्याण का पथ पर चलता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज का उद्धार किया सभी मानव मात्र के लिये। मगर अन्य प्राणी भी उसमें सम्मिलित हैं। क्योंकि सभी प्राणियों का नाता किसी न किसी तरह से मनुष्य से हैं। उनका कल्याण भी मानव ही उनकी रक्षा, पालन-पोषण करके करता है। विश्वमार्यम् का नारा लगा तो मोरिशिस भी उसमें समा गया क्योंकि उनका कालजयी ग्रन्थ यहाँ भी आ गया। उसका प्रकाश टिमटिमाते हुए विस्तार पा गया। रामचरितमानस, आदि ग्रन्थ तो थे। गिरमितियों की प्राण रक्षा हुई। लोग जी रहे थे। मगर एक ही ठहराव पर स्थित होकर जीना भी कोई जीना नहीं होता है। आगे बढ़ना है। ऊपपर चढ़ना है। उस समय यह काम सत्यार्थप्रकाश के आगमन ने किया। जान में और जान आ गयी। रामचरितमानस का पाठ करना, गाना बजाना तो कर लेते थे। पर गैरों के कटुवार का कोई उत्तर नहीं दे पाते थे। वाणी में वह शक्ति नहीं समा रही थी। वह बल सत्यार्थप्रकाश के पढ़ने से आया। तब शत्रुओं को मैदान छोड़कर भागना पड़ा। धर्म, संस्कृति, और भाषा स्वतन्त्र रूप से साँस ले सकते थे।

आज तक आर्यसमाज की उपस्थिति जोर पर ही है। जरा नजर दौड़ाकर देखते हैं तो जान पड़ता है कि उसका प्रभाव कहाँ तक है। वे रोक-टोक उसका प्रवेश वहाँ हो गया है। कोई रोक लगाने की हिम्मत ही नहीं कर पाता है। और न कभी पायेगा। क्योंकि आर्यसमाज चोरी का नहीं खरीदा हुआ कम्बल ओढ़कर सामने आता है और आता ही रहेगा। अन्तरिक्षयान को पृथ्वी के आकर्षण शक्ति से बाहर निकलने के लिये अतिरिक्त शक्ति की आवश्यकता होती है। वह शक्ति, वह साहस और वह निश्चय आर्यसमाज में है उसके सत्यार्थप्रकाश में है।

आज भी सत्यार्थप्रकाश जयन्ती, सत्यार्थप्रकाश मास मनाते आ रहे है। अन्य लोग रामायण मास और अन्य अनुष्ठान करते आ रहे हैं। श्रावणी उपाकर्म, स्वाध्याय का महीना है। तो वे लोग शिव जी के पूजन की परम्परा बताकर पूजा अराधना में लगे हैं। एक तरह से होड़ पर हैं उनका भी कुछ है। लोगों को रामायण, भागवत् पुराण की कथा, शिव, विष्णु पुराण की कथा से बाहर नहीं निकलने देते हैं। तो इस हालत में उन्हें प्रकाश की किरणें कहाँ दिखेगी। भरम में भटकते ही रहेंगे।

आज कभी-कभी रोसे गाँव का नाम सुनने में आता है कि वहाँ भी आर्यसमाज है, सागर तट पर जाइये 'ओ३म्' ध्वज पुरानी टीन की इमारत पर फहरा रहा है। पूरा गाँव उसे जानता है। काफी गाँवों और शहरों में भी आर्यसमाज की अपनी बैठक, पक्की इमारत है। साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक कार्यक्रम चलता है। व्रत त्यौहार भी मनाते हैं। पूरा गाँ आमन्त्रित होता है। जिसने पहले कभी यज्ञ में भाग नहीं लिया। आज यज्ञ के सामान सहित श्रद्धा के साथ आते हैं। यज्ञ में बैठते हैं। दान-दक्षिणा देते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी है जो मन्दिर भी जाते हैं। कहीं भगवान को जगाने-स्नान करवाने, खिलाने-पिलाने और आरती उतारने, उनके मन थोड़ा अन्तर देखने को मिलने लगता है। क्योंकि सर्वव्यापक ईश्वर के सामने भगवान फीका लगने लगता है। पौराणिक बाजने वाले भी बराबर अपने घरों में आर्यसमाज के पंडितों को बुलाकर यज्ञ, हवन, जन्मदिन और साधारण हवन भी करवाते हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि वे आर्यसमाज से प्रभावित हैं। शादी वैदिक ढंग से करवाते हैं। सहभोज करवाते हैं।

पौराणिक और आर्यसमाज का थोड़ा अन्तर तो है। पर आर्यसमाज के सिद्धान्त पर लगभग सभी चल रहे हैं। शिक्षा का क्षेत्र लें सभी की बेटियाँ पढ़ रही हैं। सार्वजनिक ढंग से नौकरी पर है। पर्दा नहीं करती है। आना-जाना, उठना बैठना साथ-साथ होता है यदि उन्हें बताया नहीं जाय तो बिरादरी के रोग से वे दूर ही रहेंगे। जैसे मोरिशिस ही में आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश हवन यज्ञ, अन्य धार्मिक कार्य क्षेत्र के पथिक तीन भागों में विभक्त है दो जन्मना जाति के आधार पर कर्मणा जाति का आधार लुप्त सा लगता है। कारण तो हो सकते हैं। उसका समाधान भी निकल सकता है। मगर आगे कौन आयेगा। पीछे कौन रहेगा, महर्षि दयानन्द सरस्वती के आर्यसमाज का जो सिद्धान्त है उसमें तो ऐसा दिखाई देता नहीं। आया कहां से और कैसे ये तो वरिष्ठ बुद्धिजीवी वर्ग ही बता सकते है। कभी-कभी भारत से स्वामी, संन्यासी और प्रचारक भी उसी चक्रव्यूह में आकर फंस जाते हैं। तब निकालेगा कौन? सोचना पड़ता है। भविष्य तो अन्धकार से छिपा दीखता है। लेकिन कुछ भी हो आर्य समाज का सामना करना साधारण काम नहीं है। एक ईश्वर के उपासक, गली-गली में, पेड़, नदी नाले में ये सिर झुकाने वाले नहीं है। गैर आर्यसमाजी भी आर्यसमाज को समझता है। महर्षि दयानन्द को जानता है। सत्यार्थ प्रकाश से परिचित है। पढ़ते हैं पर क्या करें बड़ी-बड़ी संस्थाएँ हैं। स्वार्थ की बात भी आ जाती है। रोटी-रोजी सामने खड़ी मिलती है। तो सबसे भला चुप को ही मान बैठते हैं। गाड़ी चली है चलती रहे। उस पर सवार हो ही जायें।

एक महर्षि दयानन्द ने संसार का काया पलट दिया। गैर हिन्दू, मुस्लिम ही अंग्रेज या कोई और सभी आर्य समाज के प्रर्वत्तक महर्षि से परिचित हैं। उनका लोहा मानते हैं। तो लगता जो महा सम्मेलन देशों-शहरों में हो रहा है, कुछ तो अच्छा फल निकलेगा। हमें खरगोश की भांति आराम करने की लत से छुटकारा पाना चाहिए तब बात बनेगी। महर्षि जी के समय की असुविध ा और कभी भी तमाम सुविधाओं को देखकर ऐसा लगता है। आर्य समाज की बीमारी यदि किसी कोने में हो तो उसका इलाज करने में देरी नहीं करनी चाहिए। ईश्वर की इच्छा से महर्षि तो चले गये। हम किस इच्छा की प्रतीक्षा करें सोचनीय बात है। महर्षि का साथ तो असम्भव है। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना ही महर्षि दयानन्द सरस्वती को जीवित रखना है। तब यदि समाज जीवित रहेगा।

– कारोलिन, वेल-दार मोरिशिस

## THE LORD RUNS A MILE

*If you move one foot to meet the Lord,*
*He will run a mile to receive you!*
*He is very kind and compassionate.*
*There is at your back His Hand*
*To protect you at all times.*
*Place thy trust in Him for support*
*Feel His hidden Hand working*
*Through all sources.*
*Surrender your ego at His Feet,*
*And be at ease for ever!*

# हे राम

❑ धर्मवीर सेठी

मोहनदास करमचन्द गाँधी (MKG) 2 अक्टूबर को समूचा राष्ट्र बापू के अभिधान से अभिहित करता है। एक ऐसा व्यक्ति जो शारीरिक रूप से चाहें कृश–काय रहा हो परन्तु मनोबल की दृष्टि से उसकी सानी नहीं। तभी तो पोरबन्दर (गुजरात) में जन्मा वह व्यक्तित्व शरीर पर धोती, पाँव में साधारण जूती और हाथ में लाठी लिए हुए इतना तेज चलता था कि उनकी गति के साथ मुकाबला करना आसान नहीं था। उनके सत्याग्रह/अनशन की तीव्रधार के सम्मुख ब्रिटिश साम्राज्य भी नहीं टिक सका और अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 को लाल किले की प्राचीर से अपना तिरंगा लहरया गया। जहाँ बापू का मनोबल जवाँ था वहाँ उनकी लाठी की भी करामात थी कि उसके सहारे वह अत्यन्त तीव्र गति से चल भी सकते थे।

बापू ने राम राज्य की कल्पना की थी, अपने देश के अति–निर्धनों की खुशहाली चाहते थे परन्तु क्या पता था कि आज प्रत्येक भारत–वासी लम्बी सांस भरते हुए अनायास, परिस्थितियों को देखते हुए, कहने पर मजबूर हो जाता है कि 'हे राम! हम किधर को जा रहे हैं।' बापू ने अन्तिम सांस लेते हुए भी यही शब्द बोले थे 'हे राम'। राजघाट पर बनी उनकी समाधि पर आज भी यही अक्षर पत्थर में उकेरे हुए दिखाई पड़ते हैं। काश! भारत के कर्णधार अपने 'बापू' की किसी बात को तो मानते! वर्ष में दो बार उनकी समाधि पर पुष्पांजलि दे देना पर्याप्त नहीं है।

ऐसा ही एक अन्य व्यक्तित्व भी आज (2.10) हमें स्मरण हो आता है जो (गुदड़ी का) लाल भी था और (दिल का) बहादुर भी। क्या हुआ वह भारत का प्रधानमन्त्री बना परन्तु उनके चरित्र में इस पद की बू तक नहीं थी। कैबिनेट का मन्त्री होने पर एक रेल दुर्घटना ने उनकी आत्मा को ऐसा कचोटा कि उन्होनें त्याग पत्र दे दिया। ऐसी मिसाल आज ढूँढे भी नहीं मिलती। शायद ''नैतिकता'' शब्द भारतीय राजनीति के शब्द कोष से ही निकाल दिया गया है। वाह रे मानव! बाहरी चकाचौंध में तू इतना सराबोर हो गया है कि आत्मा की आवाज तुम्हें सुनाई ही नहीं देती। 'जय जवान जय किसान' का नारा देने वाले भारत के ऐसे महान् सपूत 'भारत रत्न' की उपाधि से अलंकृत लाल बहादुर शास्त्री को भी हम सश्रद्ध नमन करते हैं।

बापू के राम की ओर तो थोड़ा ऊपर संकेत किया है; तो क्यों न संस्कृत भाषा में रचित वाल्मीकि की 'रामायण' की चर्चा की जाए। वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य में राम के उदात्त चरित्र को जो चित्रण किया है वह देखते ही बनता है। उन्होंने राम के चरित्र के माध्यम से युवा वर्ग को राष्ट्र के उत्थान हेतु उनका अनुसरण करने की प्रेरणा दी है। इस वर्ग के लिए परिषद् भी अनेकों आयोजन करता है क्योंकि इसी वर्ग ने देश की बागडोर सम्भालनी है। ध्यान रहे 'रामायण' की रचना संस्कृत में हुई थी। राम के चारित्रिक गुणों से महाकवि मैथिली शरण गुप्त इतने प्रभावित हुए कि उन्हें कहना पड़ा:

**राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है॥**

और विजयदशमी (दशहरा) का पर्व भी भारत भर हर्षोल्लास से मनाया गया। सन्देश या 'सत्य की असत्य पर और न्याय की अन्याय' पर विजय। खेद है कि राष्ट्र के कर्णधार राष्ट्रधर्म के स्थान पर भ्रष्टाचार धर्म निभाने में जी जाँ से लगे हुए हैं। बात यह है कि हम ने अपने आदर्श नायकों से (चाहे वे किसी भी क्षेत्र के क्यों न हों) कुछ भी नहीं सीखा। आज 'राम राज्य' की जगह 'रावण राज्य' की सी स्थिति दिखाई पड़ती है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जो भ्रष्टाचार से मुक्त हो। यहाँ तक कि प्राकृतिक आपदा में भी स्वार्थी अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। इन गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए राष्ट्र को स्वामी दयानन्द जैसे पराक्रमी नायक की आवश्यकता है।

इस तिमिर में आशा की किरण ढूँढ़ने की भरपूर कोशिश कर रही है आज समाज अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से। अन्त में इतना कहना ही पर्याप्त होगा: **न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम, सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।**

–कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति


## गौ–दान : महा–दान

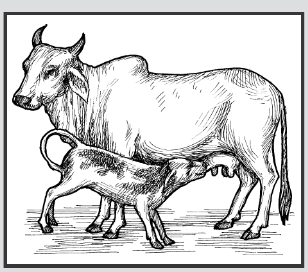

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/– रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

**टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**सत्यानन्द मुंजाल** (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# The Supreme Reality as described in Vedas

❒ Prem Sabhlok

In the Vedas the Universal God (Brahman) is formless, ineffable (nirguna) and Unmoved Mover. As Sankracharya says, "to describe Brahman even the words recoil."

However, based on the Vedic metaphysics whatever description of God is given, it can at best be a glimpse of His omnipresence, omniscience and omnipotence. He makes Himself felt whether as Adrsta - unseen cosmic power or the Supreme Reality as impersonal God. It is mainly because human senses and reason cannot analyze Him.

Rig-Veda 1-164-46 and Y.V 32-1 clearly mention that God is "One"; wise men call Brahman by different names. The souls in all human beings are the subtle particles (ansh) of the same Supreme Soul- Paramatma.

Since the entire cosmos and universe both visible and invisible continues to expand and is described as Brahamand so the Vedic metaphysicists and wise sages (rsis and munnies) found an appropriate epithet for the nameless God as Brahman. In the Rig Veda He is also mentioned as Vishnu- one who spread in Viswa. In Yajur and Atharva Vedas epithets for God are mentioned as Shiva, Shankar Brahma and Shambhu- pure and auspicious.

Upanishads describe Nirguna Brahma- the ineffable God as, "Whole is that, whole too is this and from the whole, whole cometh and take whole, yet whole remains." A few Vedic hymns can be mentioned for proper understanding of Nirguna Brahma who is the Universal God.

Rig Veda 6-15-13, 14 mentions that He is a pure illuminator, unifier, remover of all miseries, commands all to observe non-violence and other rules of righteousness, which are a-priori principles beyond any sense experiences.

Rig-Veda 6-47-18 says that for each form, He is the Model. It is His Forms that are to be seen everywhere, in spiritual and material things. His Spirit exists in all animate and inanimate life/things but is manifest in the human beings where God dwells in their hearts (Sama Veda 860). A similar description that He dwells in the human hearts is also there in Bhagavad-Gita and Srimad Bahgavatam. Rig Veda 1-9-5 and 6 mentions that God is the Lord of knowledge, infinite wisdom and material wealth. He pervades the matter and the whole space (A.V.19-20-2). Hence matter is not inert and has unsuspected vitality. Therefore excessive use of matter is a sin.

All the four Vedas describe that He and His cosmic laws (Rta) are the same. Those who follow His laws and commandments can realize Him in one birth. He is unborn (ajo) and incarnation of God as a human being is not visualised (Y.V.34-53, 40-8 and A.V. 10-23-4). He lives within you and you live within Him as one of His tiny living cells.

Nevertheless, the highest concept of divine mercy is reached that HE permits His children all things to be said about Him even if you do not believe in Him. Thus, toleration is an important teaching of Vedic metaphysics. Vedic hymns clearly mention that He is at your disposal but on His terms and not your terms. He expects you not to disturb violently His Design of the earth and the universe. Every thing belongs to Him, we use it only temporarily, whether it is food, air, water and He expects all of us not to over use these (Sama Veda 274). We should keep wealth and all material possessions only for our preservation lest we become exploiters by taking away some one else's share. Sama Veda 274 clearly advises need-based living.

According to Rig Veda 10-90-13 to 17, the entire universe is His body. Sun and Moon are His eyes, Earth is His feet and Heaven is His head. Our eyes can see 1/4th of Brahamand (entire cosmos within and beyond visual range). He acts by the necessity of His nature. His decrees are eternal truths and with dedicated and transcendental research, all these truths can be found out for the welfare of self, society and mankind Yajur Veda 40-5 tells us that He is within the entire universe and surrounds it externally. For those who want to realise Him, they have to follow the path of moderation, righteousness and cosmic laws of necessity (Rta), which are permanent truths and His Commandments. Kena Upanishad 2-5 mentions that God can be realised in one life. If you do not realise in one life, you are a great loser.

The most beautiful description of Brahma is given in the Vedantic School of Indian philosophy, based on Upanishads. There was neither being nor not being, neither vayu (air) nor akash (ether) which is beyond...neither death nor immortality existed, no distinction was yet between day and night, darkness was first concealed in darkness and all this was indiscriminate chaos. In that stage of shuniya (cosmic void), apart from that nothing was there whatsoever. It was when desire as the perennial germ of the mind arose for the first time and the entire cosmos was born out of cosmic Golden Egg (Hiranya garbha). The One, which was covered by cosmic Void (shuniya), was manifested through the light of Tapas (spiritual fire) (R.V X-129-1 to 3).

Thus the One Lord of all that moves and that is fixed, of what walks, what flies became the Lord of all this multiform creation (R.V. III-54-8). The Cosmic Word OM becomes the raft of knowledge. According to Yajur Veda XL-17, this word OM is Brahma Itself. "OM Khamma Brahma"- OM Thy name is Brahma. Through this Word, He not only created Prakrti and Universe but also protects the same with the divine energy coming out of Shabad Brahma. This cosmic word OM is from the root Ava (to protect).His all Forms are supreme in design and beauty. As He pervades every where and all material objects are His manifestations, so in this phenomenal world, we can see Him through many forms like the Sun, Moon, mountains, sea and even human beings etc., but He remains Formless. Thus His forms are His creative art Maya (R.V. VI-45-16, VI-47-18. S.V. 1710 and A.V. VI- 36-3). As God's attributes are infinite being ineffable, the hymns at best only give glimpses of His attributes.

Those who believe in one formless and ineffable God, invariably follow the philosophy of Vedic Iddm Nan Mam- nothing for self all for society.The believers of One God are invariably transparent and follow the path of truth and non-violence in thought and action.

It is thus quite apparent for the entire mankind that movement is generally towards pluralism, animism, fanaticism, fundamentalism, gurudom, kingdom of priests and extreme materialism. It is for the mankind to decide to live without His divine guidance owing to the vehement effect of Maya- a huge cosmic saw with sharp teeth OR to pass through the gap between these teeth and seek the only One Supreme Realty and remain under His divine guidance by following His commandments and laws. All the main scriptures of major religions have confirmed based on transcendental research that He is pure love, merciful, benevolent and perfect knowledge. Knowing Him is bliss and not knowing Him is ignorance and misery.

For more details about Vedic God kindly read chapter 8 of "Glimpses of Vedic Metaphysics" for on line reading/taking print at no cost on Website http://www.sabhlokcity.com/metaphysics. The book can also be accessed through google.com, yahoo.com and lulu.com.

# प्रेम में महान शक्ति

❐ जगदीश चन्द्र कसेरा

प्रेम में महान शक्ति है! यह रोगों को दूर करके आयु को बढ़ाता है और आनन्द धन की प्राप्ति कराता है। यदि आप अपने जीवन को सुखमय ओर आनन्द मय बनाना चाहते हैं तो अपने जीवन में प्रेम का महासागर भरो। प्राणि मात्र से प्रेम की भावना घर से आरम्भ होती है। पहले अपने माता-पिता के साथ प्रेम का व्यवहार करो। अपने भाई-बहन, बन्धु-बान्धव, पड़ोसी, समाज, देश और राष्ट्र से प्रेम करो। फिर अपने प्रेम की परिधि को बढ़ाते हुए संसार के प्राणि मात्र से प्रेम करो।

प्रेम वह स्वर्णिम सीढ़ी है जिसके द्वारा मनुष्य स्वर्ग का आरोहण करता है। जिस प्रकार गौ अपने नवजात शिशु के साथ प्यार करती है। गाय के प्रेम में स्वार्थ की भावना नहीं होती ऐसा ही प्रेम हम करना सीखें। सार्वभौम प्रेम उत्पन्न करो प्राणिमात्र से प्रेम करो।

**मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे!** यजु. 36.18

अर्थात मैं संसार के सारे प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ। याद रखो **ईशावास्यमिद ౮ं सर्वम्।** यजु. 40.91

यह सारा संसार ईश्वर से आच्छादित है। ईश्वर इसमें ओत प्रोत है, अतः घृणा, ईर्ष्या, जलन, शत्रुता और दूसरों की अपमानित करने की भावनाओं को हम अपने हृदय से निकाल दें। सबकी सेवा करो। सबका सम्मान करो। सबके साथ प्रेम करो और सबमें ईश्वर के दर्शन करो। आपकी आंखों में स्नेह, हृदय में प्यार और वाणी में मिठास हो।

जिस व्यक्ति में दूसरो के लिए प्रेम नहीं, सहानुभूति नहीं, जिसके हृदय में प्रेम नहीं हो जो प्रेम का पुजारी नहीं, वह जीवित हुआ तो क्या है वह वस्तुतः तो मृतक के समान है। कबीरदास जी ने कितना सुन्दर लिखा है।

**जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।**
**जैसे खाल लुहार की, सास लेत बिनु प्राण॥**

प्रेम से न केवल इस लोक में सफलता मिलती है, अपितु यह परलोक को सुधार में भी सहायक होता है। प्रेम वह अग्नि है जिसमें पाप और ताप जलकर भस्म हो जाते हैं। प्रेम की अग्नि में अपने मन-वचन और कर्म को पवित्र करो। प्रेम के पवित्र सागर में डुबकियाँ लगाकर स्नान करो। प्रेम के माधुर्य का आनन्द अनुभव करो और प्रेम की प्रतिमा बन जाओ। मिलकर एक दूसरे की रक्षा करो। लड़ाई झगड़ा आपके निकट नहीं आवे। कभी परस्पर द्वेष मत करो। एक दूसरे से प्रेम करो। प्रेम मे वह जादू है कि शत्रु भी अपना मित्र बन जाता है। प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है, क्रोध से क्रोध, घृणा से घृणा और द्वेष से द्वेष। जिसके पास प्रेम है उसके पास सद्‌गुण और सम्पति स्वयं खिंची चली आती है। जिसके पास प्रेम है उसे न किसी का भय होता है ओर न ही पतन की चिन्ता उसका सर्वत्र आदर होता है।

## गलती

गलतियां हम सब करते हैं
गलती करके पछताते भी हैं
कई बार वही गलती दोहराते भी हैं
कहते है इन्सान गलती का पुतला है
काम करेंगे तो गलती की संभावना भी रहेगी ही
प्रयास होना चाहिए कि गलती न हो
हो जाए तो उसे मान लेने में
किंचित संकोच न हो तथा अविलम्ब
उसे सुधारने का हर सम्भव प्रयत्न हो,
गलती कर के उसे उचित ठहराना
ऐसा है जैसे वही गलती फिर दोहराना
मानसिक संकीर्णता और हठधर्मी दिखाना,
गलती सुधारने में कम समय और परिश्रम
लगता है बजाय उसे सही ठहराने के
गलती मान लेना हृदय की निर्मलता दिखाता है
गलती को उचित सिद्ध करने का हठ
दूषित मानसिकता दर्शाता है
गलती के संदर्भ में हमारा मूल-मन्त्र
हमेशा होना चाहिए
उसे सुधारना उचित न ठहराना

– **ओम प्रकाश बजाज,** बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.

# टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज ( अनारकली ), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**सत्यानन्द मुंजाल** (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# પ્રકાશપુંજ

પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર'
Email:- pt.rammehta@gmail.com

દીવાળીને દીપાવલી પણ કહે છે. અનેકાનેક દીવડાઓનો ઝગમગાટ એટલે દીવાળી. દીવાળીની રાત એટલે ગુજરાતી પંચાગ પ્રમાણે આસો મહીનાની અમાવસ્યા જે આખા વર્ષમાં સહુથી લાંબી અમાવસ્યા ગણાય છે. આ અમાવસ્યાનો ઘોર અંધકાર સામે યુદ્ધે ચડવા ભારતીય વૈદિક સમાજે અસંખ્ય દીવડાઓ પ્રજ્વલિત કર્યા અને ઘોર અંધકારને ભાગવા માટે મજબૂર કર્યો.

બીજો એક ઘોર અંધકાર છે અજ્ઞાનનો. અમાવસ્યાના અંધકાર કરતા આ અંધકાર અત્યન્ત જોખમી છે. એના દુષ્પરિણામ આજે પણ આપણો હિન્દૂ સમાજ ભોગવી રહ્યો છે.

અમાવસ્યા પૂર્વેની રાત્રીને નક્ષત્ર જ્યોતિષિઓએ શિવરાત્રી કહી છે. શિવ એટલે કલ્યાણકારી. અને આવી જ એક શિવરાત્રી.... ના..ના... મહાશિવરાત્રીની રાત્રે એક ચિનગારીએ અંગારાનું રૂપ ધારણ કરવાનો પ્રારમ્ભ કર્યો. અંગારાને પોતાનો પરિવાર, ગામ, સમાજ આ બધું જ વિસ્તાર પામવા માટે સાંકડા લાગ્યા. પોતાનો પરિવાર, ગામ, સમાજ આ બધાનો ત્યાગ કરીને બહાર આવ્યો. ઘર, ગામ, શહેર જંગલ જ્યાં પણ લાગ્યું કે ચિનગારીને પ્રજ્વલિત કરવા માટે આવશ્યક ઇંધણાદિ મળશે ત્યાં ત્યાં અંગારો ગયો. છેવટે મથુરામાં જરૂરી ઇંધણ મળ્યું અને ધીરે ધીરે એ અંગારો પ્રજ્વલિત થવા લાગ્યો. સમય આવ્યો અને એ અંગારાએ પ્રચંડ પ્રકાશપંજનું સ્વરૂપ ધારણ કર્યું. ધારણ કરેલ તેજ-પ્રકાશ માત્ર પોતાની પાસે જ ન રાખતા એ સંસારમાં યત્ર-તત્ર-સર્વત્ર ફેલાવતો ગયો. જે કોઈ એના સાન્નિધ્યમા આવ્યું એ પણ એના સ્પર્શે પ્રકાશપુંજનું રૂપ ધારણ કરતા ગયા. આવા પ્રકાશપુંજના સમુહે સંગઠન બનાવ્યું. નામ આપ્યું સંસારના સર્વશ્રેષ્ઠ મનુષ્યોનું સંગઠન એટલે કે આર્યસમાજ.

કેટલાક હતભાગીઓ પ્રકાશપુંજને સહન ન કરી શકયા. પ્રયત્નો કર્યા કે પ્રકાશપુંજનું તેજ આથમી જાય પણ પ્રકાશપુજ સદેહે તો સંસારમાં ન રહ્યો પણ પોતાની પાછળ કંઈક વારસો મૂકતો ગયો કે સદૈવ સંસારમાં પ્રકાશ ફેલાતો જ રહે. આ વારસો હતો સત્યાર્થપ્રકાશ, ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા, સંસ્કારવિધિ, વેદભાષ્ય અને બીજા ખજાનાનો.

આ ખજાનામાંથી અનેકાનેક રત્નો અજવાળે આજે પણ સમાજ પોતાની કેડી કંડારી રહ્યો છે.

આવા જ એક રત્નના પ્રકાશની કેડી પર ચાલતા ચાલતા પોરબન્દરના શેઠ નાનજીભાઈ કાલિદાસ મહેતાએ જ્યાંથી પ્રકાશપુંજનો ઉદ્ભવ થયો હતો એ ગામ ટંકારામાં એક સ્મારકની સ્થાપના કરી. ટ્રસ્ટમાં મહત્ત્વની શરત મૂકી કે અહીં માત્રને માત્ર પ્રકાશપુંજના પ્રકાશના આધારે જ કાર્યો થશે.

કાર્યારમ્ભ થયો. પ્રારમ્ભ કર્યો કર્મવીર પં. આનન્દપ્રિયજીએ. શરૂઆતમાં ભટકાયા, પછડાયા પણ હિમ્મત ન હાર્યા. એમણે ભારતના સર્વોચ્ચ ન્યાયાલયના મુખ્ય ન્યાયાધાશ મહેરચન્દ મહાજનને જવાબદારી સોંપી. નવેસરથી પુરુષાર્થ આરંભાયો. મહાજનજી પંજાબના જલંધરથી તપોમૂર્તિ વિદ્વાન પં. સત્યદેવ વિદ્યાલંકારને ટંકારા લઈ આવ્યા. જવાબદારી સોંપી પ્રકાશપુંજના અજવાળે આગલ વધવાની. અડચણો – વિઘ્નો આવતા ગયા. માત્ર પાંચ વિદ્યાર્થિઓથી આરંભાયેલો પુરુષાર્થ પરિણામ બતાવવા લાગ્યો. અહીં ઇતિહાસ નથી લખવો. આ પુરુષાર્થે સમાજને કેવા પરિણામ આપ્યા છે તેના પર નજર નાખવી છે.

ઈ.સ. ૧૯૭૭ લગભગ મુમ્બઈની સાંતાક્રુજ આર્યસમાજમાં રવિવાસરીય સત્સંગના સમાપન પછી એક ફાટેલહાલ, કેટલાય દિવસનો ભૂખ્યો છોકરો સત્સંગીજનોને હાથ જોડીને પ્રાર્થી રહ્યો હતો કે મારે વૈદિક દર્શનશાસ્રો ભણવા છે, મને મદદ કરો. ટંકારાના જ સ્નાતક ત્યાં પુરોહિત હતા. તેમણે એ ભાઈને સાન્તવન આપ્યું. ટ્રસ્ટના મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી શ્રી ઑંકારનાથજીને તેઓએ વાત કરી. ઑંકારનાથજીએ એ છોકરાને ટંકારા મોકલવા માટે બધો વ્યય આપ્યો.

એ છોકરાએ એક દિવસ ટંકારાના ગુરુકુલમાં જાહેરમાં કહ્યું હતું કે મારા બાપુજીતો એક નાનકડા સ્ટેશન પર કુલીનું કામ કરે છે.

આજે એ છોકરો ટંકારાથી સિદ્ધાન્તઆચાર્યની ઉપાધિ મેળવીને સ્વમાનભેર પ્રતિષ્ઠિત પદ પર આર્યસમાજની સેવામાં લાગેલો છે.

એજ વિદ્યાર્થીએ મને લખેલપત્ર અવિકળ રૂપે નીચે મૂક્યો છે.

आदरणीय गुरुभ्राता श्रीरमेश मेहताजी।

सादर नमस्ते!

आपने जीवित–मूर्तियों की पूजा का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया कि मुझे भी कुछ घटनाएँ स्मरण हो आयीं..... सन 1972 की बात है... एक मारवाड़ी पण्डित श्री ओमप्रकाश शर्मा (ओमी महाराज) जीअच्छे स्वाध्याय– प्रेमी हैं। वे ''स्वामीविवेकानन्द –श्रीरामकृष्ण– आचार्यरजनीश– कल्याणागीताप्रेस– श्रीरामशर्मा– स्वामीआत्मानन्द रायपुर, म.प्र.) आदि के साहित्य–अध्ययन में बहुत डूबे रहते थे। उन्हीं के सम्पर्क में आकर वह बालक गहन–स्वाध्यायी बन गया। उस बालक के विद्यालय के गुरुजन उससे कहते–बेटा! परीक्षा नजदीक है, अपने कोर्स की किताबों की तरफ ध्यान दो। मगर उस बालक को मात्र विद्यालयीन विषयों पर ही अटक जाना कहाँ मंजूर? क्योंकि

उसमें यह खूबी थी कि एकबार किसी बात–विषय–पुस्तक को सुन–पढ़ ले तो सब स्मरण करके सुना देता था।

आज के तमाम तथाकथित आचार्यो–भगवानों–महागुरुओं के उपदेशों को वह बतला देता है कि इस बात को पहले किस उपदेश ने कहाँ पर, किस प्रकार उल्लेख किया है। उन्हीं श्रीओमीमहाराज के हाथों में एक दिन उस बालक ने महर्षि स्वामीदयानन्दसरस्वती जी की प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रचना ''सत्यार्थ–प्रकाश'' को पहली बार देखा तो पन्न पर पन्ने उलटने लगा। क्योंकि अब तक उस बालक ने जितने लोगों के उपदेश पढ़े–सुने थे, वे प्रमाण की बात ही नहीं करते थे। वेद–वेदांत, दर्शन, उपनिषद की बात तो बहुत करते, मगर स्पष्ट प्रमाण तो महर्षि स्वामीदयानन्दसरस्वतीजी महाराज ने अपने ग्रन्थो में दिए हैं।

श्रीओमीमहाराज ने उस बालक से ''सत्यार्थ–प्रकाश'' छीनते हुए कहा–''अरे शंकर–बेटा! इस किताब को अभी तू छोड़ वरना दिमाग घूम जायेगा। तेरा...''। जब उस बालक ने हायरसेकेंड्री पास कर ली, तब शर्माजी ने उस बालक को ''सत्यार्थ–प्रकाश'' पढ़ने के लिए दी। नेशनल बिल्डिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया के एक बंगला–भाषी इंजीनियर आदरणीय श्रीसरकार साहब ने आर्य समाज शान्ताक्रूज के बारे में उस मेधावी बालक को बतलाया कि ''आर्ष–गुरुकुलों में ही वेद–वेदांगों का ठीक–ठीक अध्ययन कराया जाता है...'' और उस बालक को संस्कृत, संस्कृति संस्कार के प्रामाणिक अध्ययन की प्यास ने चुपके से गृह–त्याग को मजबूर कर दिया। चुपके से इसलिए कि उस समय कोई भी माता–पिता अपने बच्चों को दूर–प्रदेशों में नहीं जाने देते थे। लँका म सोन के भूति के हमर का काम उस बालक के आगे की कहानी तो आपने लिख ही दी है।

मोटाभाई....... इतना कुछ जरूर संशोधित करूंगा कि वह बालक व्यस्क हो गया है, आज भी ज्ञान–पिपासु है, महर्षि स्वामीदयानन्दसरस्वतीजी महाराज के बताये शाश्वतसत्यसनातन वैदिक धर्म पर चलने स्वयम प्रयासरत है और छत्तीसगढ़ के ग्रामीड क्षेत्रों में भी पाखण्ड–खंडिनी–ध्वजा लहराकर वैदिक–नाद का गुन्जन आरम्भ कर चुका है....।

हमारे देश में पिछले कई सालों से वेदाध्ययन और गुरुकुलीय–परम्पराओं के समाप्त हो जाने का ही दुष्परिणाम है कि जैन–बौद्ध आदि विभिन्न मत–मतान्तरों का जन्म हुआ। अब तो न जाने कितने देश अपने–अपने मत–मतान्तरों को तथाकथित वैदिक आधार देकर प्रमाणित करने में लगे हुए हैं–ईसा–मूसा–मोहम्मद आदि का उल्लेख तो हिन्दूओं के पुराने ग्रंथों में.....

**પ્રારમ્ભમાં જ કહ્યું તેમ દીવાળીનું મૂળ નામ છે દીપાવલી. એક કરતા વધારે દીપમાળાનો સમૂહ. એમાં એક દીવાની જ્યોતથી બીજો દીવો પ્રજ્વલિત કરવામાં આવે છે.**

**એક પ્રકાશપુંજ પોતાના તેજથી અનેકાનેક દીપકો પ્રજ્વલિત કરતો ગયો. આજે પણ એના પ્રકાશમાં કેટ-કેટલાય દીવડાઓ સંસારમાં પ્રકાશ રેલાવવાનો ઉદ્યોગ કરી રહ્યા છે.**

**દીપમાલાના પ્રકાશના પર્વે એ પ્રકાશપુંજને શતશઃ વન્દન**

આર્ય સમાજ જુનાગઢ તથા હુંદરાજભાઈના સંયુકત ઉપક્રમે તા.૧૩–૧૦–૨૦૧૩ વિજયાદસમી પર્વ નીમીતે મયારામ આશ્રમમાં વિશેષ યજ્ઞ તથા વસ્ત્રદાનનો કાર્યક્રમ યોજવામાં આવ્યો. મયારામ આશ્રમમાં આસપાસના ગામડાના મધ્યમવર્ગના બાળકો શિક્ષણ મેળવે છે. કાર્યક્રમનો પ્રારંભ યજ્ઞથી કરવામાં આવ્યો. સર્વે વિદ્યાર્થીઓએ પણ આહુતિ અર્પણ કરી. આર્થિક નબળા ૨૬ વિદ્યાર્થીઓને એક જોડ કપડાનું વિતરણ હુંદરાજભાઈ તરફથી કરવામાં આવ્યું તેમજ આર્ય સમાજ તરફથી બધાને અલ્પાહાર આપવામાં આવ્યો. આ કાર્યક્રમમાં જુનાગઢ સીનીયર સીટીઝન મંડળના સભ્યોએ ખાસ હાજર રહી ઉત્સાહવર્ધન કાર્ય કર્યુ હતું. સીનીયર સીટીઝનના સભ્ય દવે સાહેબે હાસ્ય થેરેપી ધ્વારા સૌને ખડખડાટ હસાવી બધાને પ્રફુલીત કરી દીધા. કાર્યક્રમ ખૂબ સુંદર રહયો.

प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि परमात्मा की उपासना करे और परमात्मा से मांग करे कि हे प्रभो मेरी बुद्धि संमार्ग पर चले जिससे कि मैं जीवन में किसी प्रकार का पाप नहीं करूं और असत्य के मार्ग पर न चलूं। किसी भी मनुष्य के साथ बेईमानी, धोखा नहीं करूं। जिससे मेरा जीवन सुखी हो। मेरे जीवन के साथ मेरा परिवार भी सुखी हो। मेरे जीवन के साथ मेरा परिवार भी सुखी होगा, क्योंकि मेरे द्वारा कमाया गया धन पवित्र होगा। पवित्र अन्न खाने से बुद्धि पवित्र होगी, जिससे पवित्र कर्म होंगे। कर्म पवित्र होगे तो सुख ही मिलेगा।

**– स्वामी दयानन्द**

# ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2014 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

**वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट**
**(सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)**

विजेता टीम को शिल्ड प्रदान किया जाएगा। ❑ खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जाएगा। ❑ प्रवेशपत्र दिनांक 20 फरवरी 2014 तक स्वीकृत होंगे। ❑ यह टूर्नामेन्ट दिनांक 20 से 24 फरवरी 2014 के बीच में होंगी।

**प्रश्नमंच प्रतियोगिता**
**(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)**

महर्षि दयानन्द के जीवन, कार्य, आर्यसमाज के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछ जायेंगे। ❑ कक्षा 8 से 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। ❑ एक विद्यालय से दो विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। ❑ भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 20 फरवरी 2014 तक संयोजक को पहुंचा दे। ❑ प्रथम सिलेक्शन राउण्ड दिनांक 26.02.2014 को प्रात: 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाली ऋषि बोधोत्सव में मुख्यमंच पर होगा। ❑ संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र, प्राचीन वैदिक सिद्धान्त ज्ञान पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं। ❑ प्रथम तीन विजेताओं को नकद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। ❑ प्रत्येक को प्रमाणपत्र दिया जायेगा। ❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगितयों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❑ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क रहेगी।

**डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार**

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 194 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वे अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व भावार्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिह्न से पुरस्कृत किया जायेगा।

बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा। ❑ भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क रहेगी। ❑ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 20 फरवरी 2014 तक पहुंचा देवें। ❑ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 26.02.2014 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।

अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

**आचार्य रामदेव**, (प्राचार्य म.द. उपदेशक महाविद्यालय)
टंकारा-363650 (जिला-मोरबी), गुजरात, मो. 9913251448
**हंसमुख परमार**, प्रतियोगिता संयोजक, मो. 9879333348

**एक प्रेरणा**

## परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

## गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

**एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।**

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

**-: निवेदक :-**

**सत्यानन्द मुंजाल** (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

# रेकीः एक सम्पूर्ण उपचार पद्धति

❑ सीताराम गुप्ता

### रेकी क्या है?

यह जापानी भाषा का शब्द है जो **'रे'** और **'की'** से मिल कर बना है। **'रे'** का अर्थ है 'सर्वव्यापी' (Omnipresent) तथा 'की' का अर्थ है **'जीवन शक्ति'** या **'प्राण'** (Life Force Energy)। इस प्रकार रेकी वह ईश्वरीय ऊर्जा, दिव्य ऊर्जा अथवा आध्यात्मिक ऊर्जा है जो इस समस्त ब्रह्माण्ड में हमारे चारों ओर व्याप्त है। हम सब इसी जीवनशक्ति को लेकर पैदा होते हैं और इसी के द्वारा जीवन जीते हैं। समय के साथ-साथ अनेक कारणों से जब हमारे शरीर में इस ऊर्जा का प्रवाह कम हो जाता है अथवा संतुलन बिगड़ जाता है तभी हमारा शरीर रोगों की ओर आकर्षित होता है। इस जीवनशक्ति का सुचारू और संतुलित प्रवाह हम सभी का जीवित और स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। रेकी उपचार-अथवा साधना में हम इसी सर्वव्यापी जीवन-शक्ति का उपयोग अपने लाभार्थ करते हैं।

### रेकी की खोज-

रेकी एक अनादि ऊर्जाशक्ति है। भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध तथा ईसामसीह में यह उपचारक शक्ति विद्यमान थी जिससे वे किसी भी व्यक्ति अथवा अन्य प्राणी को अपने स्पर्शमात्र से व्याधि मुक्त कर देते थे। इसके पर्याप्त प्रमाण हमें मिलते हैं। कालान्तर में यह शक्ति क्षीण होती चली गई और लुप्तप्राय हो गई। वर्तमान काल में इसकी खोज अथवा इसको पुन: स्थापित करने का श्रेय जापान के क्योटो विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक डॉ. मिकाओ उसुई को जाता है।

डॉ. उसुई ने उन्नीसवीं सदी के मध्य में इसको पुन: स्थापित किया। डॉ. मिकाओ उसुई के नाम पर इस पद्धति को "Usui Shiki Ryoho" अथवा "Usui System of Natural Healing" अर्थात् प्राकृतिक उपचार की उसुई पद्धति भी कहा जाता है। डॉ. मिकाओ उसुई-विश्वविद्यालय में क्रिश्चियन विद्या के प्राध्यापक थे। एक दिन उनके एक छात्र ने पूछा कि क्या ईसा मसीह की तरह मात्र स्पर्श द्वारा रोगों को दूर करना संभव है? डॉ. उसुई इस तथ्य से सहमत तो थे कि स्पर्श द्वारा उपचार संभव है, क्योंकि बाइबिल में यह लिखा है लेकिन वे उपचार की इस विधि से अनभिज्ञ थे। इस घटना के बाद डॉ. उसुई ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया तथा बिना दवा के स्पर्श द्वारा उपचार की इस पद्धति को खोजना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इस सिलसिले में वे अमरीका, जापान, चीन, तिब्बत तथा भारत में आए और अनेक ग्रंथों का अध्ययन किया तथा अनेकानेक लोगों से मिले। अंत में एक संस्कृत ग्रंथ "कमलसूत्र" में उन्हें इसकी जानकारी मिली, लेकिन आध्यात्मिक ऊर्जा नहीं जिससे वे उपचार कर सकते। जापान में कुरायामा पर्वत पर इक्कीस दिन की तपस्या या साधना के बाद उन्होंने वह शक्ति खोज ली जिससे स्पर्श द्वारा उपचार संभव हो सके और 'रेकी' के प्रचार-प्रसार में जुट गए।

उन्होंने भिखारियों की बस्ती में जाकर नि:शुल्क उपचार कार्य प्रारम्भ किया लेकिन उन्हें अनुभव हुआ कि बिना माँगे और वो भी मुफ्त में मिली वस्तु का कोई महत्व नहीं होता। अत: उन्होंने दो प्राथमिक नियम बनाए-

1. जो व्यक्ति रेकी की शिक्षा प्राप्त करना चाहे अथवा रेकी उपचार लेना चाहे केवल उसे ही सिखाया जाए या उसका उपचार किया जाए।

2. रेकी सीखने वाले या रेकी उपचार लेने वाले व्यक्ति से अपनी सेवा के बदले कुछ न कुछ अवश्य लिया जाए।

डॉ. मिकाओ उसुई ने डॉ. चुजीरो हयाशी को रेकी का प्रशिक्षण देकर अपने बाद रेकी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी। डॉ. चुजीरो हयाशी के बाद सुश्री टकाटा हवायो नामक महिला उनकी उत्तराधिकारी बनी तथा सन् 1970 व 1980 के मध्य उन्होंने इक्कीस रेकी शिक्षकों को तैयार किया जो अब तक लाखों रेकी शिक्षक तैयार कर चुके हैं।

भारत में सबसे पहले रेकी सीखने और उसका प्रचार-प्रसार करने वालों में दो नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं- अहमदाबाद के प्रवीण डी. पटेल तथा मुम्बई की श्यामल दुर्वे।

रेकी उपचार की प्रकृति-

रेकी उपचार में हाथों की हथेलियों से छूकर उपचार किया जाता है। अत: यह पद्धति स्पर्श-चिकित्सा (Touch Healing) की श्रेणी में आती है। रेकी उपचार के हाथों की दोनों हथेलियों से रेकी ऊर्जा प्रवाहित होती है जो छूने पर स्वयं उसको या दूसरे व्यक्ति को उपचार में सहायता पहुँचाती है।

### 'रेकी शिक्षक' और 'रेकी चिकित्सक'-

**'Reiki Teacher & Reiki Healer' -**

रेकी शिक्षक वह व्यक्ति है जो किसी भी व्यक्ति को रेकी सिखाता है तथा उपचार करता है। रेकी सीखने वाला स्वयं का तथा दूसरों का उपचार तो कर सकता है लेकिन रेकी सिखा नहीं सकता। रेकी की शिक्षा देने के लिए कम से कम रेकी मास्टर की डिग्री की आवश्यकता है। रेकी मास्टर दूसरों को रेकी चिकित्सक बना सकता है तथा रेकी ग्रांड मास्टर रेकी मास्टर बना सकता है।

### रेकी कैसे कार्य करती है?

कोई भी व्यक्ति जो रेकी का प्रारंभिक प्रशिक्षण लेता है रेकी चैनल या माध्यम कहलाता है। रेकी उसके शरीर में ऊर्जा तरंगों के रूप में बहती है जो उसकी हथेलियों के माध्यम से उत्सर्जित होकर उपचार में मदद करती है। रेकी कैसे कार्य करती है इसको सही जानने के लिए शरीर के सात चक्रों अथवा ऊर्जा केन्द्रों की जानकारी आवश्यक है। ऊपर से नीचे की ओर स्थित क्रमशः सात चक्र निम्नलिखित हैं-

| चक्र का नाम | रंग |
|---|---|
| 1. सहस्रार (Crown) | Violet बैंगनी |
| 2. आज्ञाचक्र (Third Eye) | Indigo नीला |
| 3. विशुद्ध चक्र (Throat Chakra) | Blue (Sky B.) आसमानी |
| 4. अनाहत/हृदय चक्र (Heart Chakra) | Green हरा |
| 5. मणिपुर चक्र (Solar Plexus) | Yellow पीला |
| 6. स्वाधिष्ठान चक्र (Hara Chakra) | Orange नारंगी |
| 7. मूलाधार चक्र (Root Chakra) | Red लाल |

हमारे शरीर में ऊर्जा का प्रवाह इन्हीं चक्रों के माध्यम से होता है। रेकी उपचार-प्रक्रिया में रेकी-ऊर्जा हमारे सहस्रार (अथवा Crown

Chakra) से प्रविष्ट होकर आज्ञाचक्र, विशुद्ध चक्र, हृदय चक्र तथा हाथों से होती हुई दोनों हाथों की हथेलियों से उत्सर्जित होती है। इसके लिए किसी बाह्य प्रयास की आवश्यकता नहीं होती । मात्र सोचने और हथेलियाँ रखने से उपचार की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। जरूरत है तो सिर्फ एक बार रेकी शिक्षक से प्रशिक्षण लेने की।

**रेकी सुसंगतता अथवा शक्तिपात-**

रेकी शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान ऊपर के चारों चक्रों को Attune कर रेकी ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित तथा अवरोधमुक्त कर देता है। इस प्रक्रिया को सुसंगतता अथवा शक्तिपात अर्थात् Attunement कहते हैं। इस प्रक्रिया को गुप्त रखा जाता है। मात्र पढ़ने से इसकी शक्ति प्राप्त नहीं होती क्योंकि इसके प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं- स्पर्श, दृष्टि, मंत्रोच्चारण, प्राणप्रवाह (प्राणाहुति) तथा संकल्प।

एक बार शक्तिपात हो जाने के बाद जीवन-भर ये आध्यात्मिक ऊर्जा आपके चाहने मात्र से तुरंत प्रवाहित होकर उपचार में सहायक होती है।

**रेकी की सुचारूता-**

क्योंकि रेकी ऊर्जा का प्रयोग करने वाला व्यक्ति ऊर्जा का वाहक मात्र होता है, स्रोत नहीं, इसलिए प्रयोग के कारण रेकी-उपचारक की अपनी ऊर्जा कम नहीं होती। अपितु जब वह दूसरे की चिकित्सा करता है तो उसकी स्वयं की चिकित्सा भी साथ-साथ हो जाती है। एक रेकी चैनल जब स्वयं की अथवा दूसरों की चिकित्सा नहीं भी करता है तब भी न्यूनाधिक मात्रा में ऊर्जा का प्रवाह उसकी हथेलियों के माध्यम से बना रहता है जो उसके चारों ओर एकत्रित होकर उसके आभामण्डल अर्थात् Aura को मजबूत तथा विस्तृत करता है। व्यक्ति का आभामण्डल जितना विस्तृत और ऊर्जस्वित होगा व्यक्ति उतना ही अधिक स्वस्थ और निरोग होगा। ऐसे व्यक्ति के पास बैठना भी बड़ा आनंददायक लगता है। लेकिन क्यों? क्योंकि इन सब में ऊर्जा का प्रवाह पर्याप्त होने के कारण इनका आभामण्डल विस्तृत और ऊर्जस्वित होता है और स्वभाविक रूप से आकर्षित करता है।

**रेकी द्वारा उचपार कैसे किया जाता है?**

जब रेकी द्वारा उपचार करते हैं तो हथेलियों को शरीर के विभिन्न भागों पर क्रमशः तीन-तीन मिनट तक रखते हैं। पूरे शरीर को उपचारित करने के लिए रेकी गुरूओं ने चौबीस से तीस के बीच स्थान निर्धारित किये हैं। इसमें 72 से 90 मिनट तक का समय अपेक्षित है। समयावधि आवश्यकतानुसार कम-ज्यादा की जा सकती है। किसी विशेष भाग में पीड़ा या रोग होने पर उस विशिष्ट अंग को ज्यादा समय तक रेकी देते हैं। सात चक्रों का रेकी में विशेष महत्व है अतः यदि पूरे शरीर को रेकी दे पाने में समय की कमी या अन्य कठिनाई है तो चक्रों को अवश्य रेकी दें। स्वयं के सहस्रार को रेकी नहीं दी जाती क्योंकि ऐसा करने से ऊर्जा का प्रवेश बाधित हो जाएगा। दूसरे को रेकी देते समय उसके सहस्रार को रेकी दी जा सकती है।

रेकी प्रारंभ करने वाले व्यक्ति को शुरू में कम से कम इक्कीस दिन पूरे शरीर की नियमित रूप से हीलिंग करनी चाहिए।

**स्पर्श-चिकित्सा तथा दूरस्थ चिकित्सा-**

स्पर्श-चिकित्सा में हम स्वयं की अथवा दूसरों की हथेलियों के स्पर्श द्वारा चिकित्सा करते हैं लेकिन दूरस्थ चिकित्सा में रोगी के शरीर को छुए बिना और देखे बिना दूर बैठ कर उपचार करते हैं। यह दूरी कुछ इंचों से लेकर हजारों मील तक की हो सकती है। इसमें रेकी प्रतीक चिन्हों अर्थात् Reiki Symbol का उपयोग किया जाता है। जो रेकी की दूसरी डिग्री में सिखाया जाता है। रेकी प्रतीक चिन्हों के उपयोग से रेकी ऊर्जा का प्रवाह चार-पाँच गुना अधिक हो जाता है जिससे समय की समस्या भी हल हो जाती है।

**क्या रेकी मात्र एक रोगोपचारक पद्धति है?**

रेकी मात्र एक रोगोपचारक पद्धति नहीं है अपितु संपूर्णता के साथ जीवन जीने की एक कला है। रेकी एक सम्पूर्ण उपचारपद्धति है। व्याधि को समूल नष्ट करने की पद्धति। रेकी न केवल भौतिक शरीर में उत्पन्न विभिन्न व्याधियों को दूर कर आरोग्य प्रदान करती है अपितु भावनात्मक संतुलन तथा आध्यात्मिक अभ्युदय अथवा चेतना के स्तर में वृद्धि द्वारा व्यक्ति को निरंतर स्वस्थ, सकारात्मक तथा उत्साहपूर्ण बनाए रखने में सहायक है। अधिकतर रोगों की प्रकृति मनोदैहिक अर्थात् Psychosomatic होती है। अधिकतर व्याधियों का मूल कारण होता है मन की स्थिति व सोच। अतः रोगों का मूल कारण है तनाव, चिंता, भय, क्रोध, निराशा, अवसाद, घृणा, उत्तेजना, प्रावरोध, कुंठा, सुस्ती और आलस्य, राग-द्वेष व अहंकार आदि नकारात्मक चित्तवृत्तियों से उत्पन्न मनः स्थिति। रेकी स्वयं में एक सम्पूर्ण ध्यानपद्धति अथवा Meditation Technique है। अतः रेकी अन्य सभी ध्यान उपचारक विधियों की तरह उपरोक्त नकारात्मक चित्त-वृत्तियों से मुक्ति प्रदान कर पूर्ण सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर अग्रसर करती है। रेकी सम्पूर्ण रूपांतरण की प्रक्रिया है । A process of complete transformation.

आंतरिक और बाह्य रूपांतरण, शारीरिक और मानसिक कायांतरण। क्योंकि रेकी शरीर में व्याप्त दूषित अथवा नकारात्मक ऊर्जा को हटाकर उसके स्थान पर स्वच्छ-सकारात्मक ऊर्जा भर देती है। अतः रेकी का पहला कार्य भौतिक शरीर को निरोग और स्वस्थ होगा और उसकी गति भी स्वस्थ होगा और उसकी गति भी सकारात्मक होगी। "शाररिक स्वास्थ्य से मानसिक स्वास्थ्य तथा मानसिक स्वास्थ्य से पुनः शारीरिक स्वास्थ्य" एक बार यह प्रक्रिया शुरू होने की देर है फिर देखिए कैसे शीघ्र ही हम सम्पूर्णता के तीसरे आयाम अथवा बिंदु आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होने लगते हैं। अपनी स्व की चेतना से जुड़ का पराचेतना तथा ईश्वरीय-चेतना से जुड़ जाते हैं। ईश्वरीय-चेतना अर्थात् ईश्वरीय ऊर्जा अर्थात् दिव्य-ऊर्जा जो स्वयं रेकी है। रेकी द्वारा रेकी से जुड़ना। ऊर्जा द्वारा ऊर्जा से जुड़ना। सम्पूर्ण ऊर्जामय होना। सम्पूर्ण रेकीमय होना।

आचार्य शंकर का अद्वैतवाद कहता है "ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः अर्थात् ब्रह्म सत्य है संसार माया, जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है। ब्रह्म और जीव अथवा ईश्वर और हम अभिन्न हैं। मैं यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि न तो मैंने अपितु हम सबने न ईश्वर को देखा है न रेकी को। दोनों ही ऊर्जा स्वरूप हैं तो फिर क्यों न हम कहें कि ईश्वरीय ऊर्जा अथवा रेकी ही सत्य है, संसार सत्य नहीं, संसार रेकी से भिन्न नहीं। रेकी ही ब्रह्म है। क्यों न रेकी से एकाकार होने का प्रयास करें।

संक्षेप में रेकी रोगों के उपचार के साथ-साथ आपसी सम्बन्धों में सुधार करने, लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करने तथा आत्मज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र स्रोत है। दुष्यंत कुमार का एक शेर है-

( शेष पृष्ठ 21 पर )

# समाचार दर्पण

## स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती स्मृति सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में स्व. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती जी की स्मृति ऐसे संन्यासीवृन्द जिनका अपना कोई मठ नहीं है और वे भारत भर में भ्रमण कर आर्य समाज और वेद का प्रचार करते हैं, को ऋषि जन्म भूमि टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर 27 फरवरी 2014 को 15000/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। आदरणीय संन्यासीवृन्दों से प्रार्थना है कि वे अपने द्वारा किए गए वेद प्रचार का विवरण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई के पते पर सूचित करने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वमान्य होगा। यह सम्मान प्रतिवर्ष इसी अवसर पर टंकारा में दिया जाता है।

## आर्ष गुरुकुलों हेतु आर्थिक सहयोग

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने निश्चय किया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से ऐसे आर्ष गुरुकुलों को सहायता राशि दी जाये जिनमें उनके द्वारा गौशाला चलाई जा रही हैं। अतः समस्त गुरुकुलों के प्राचार्यो से निवेदन है कि अपने गुरुकुल में चल रही गौशाला का विस्तृत विवरण जिसमें गायों की संख्या आदि की जानकारी हो, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई के पते पर भिजवाने की कृपा करें, प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वमान्य होगा। **-मन्त्री अरूण अब्रोल**

## प्रो. कथूरिया सम्मानित

राजस्थान के अग्रणी साहित्यिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक प्रतिष्ठान साहित्य-मण्डल ने 'हिन्दी लाओ-देश बचाओ' समारोह के अवसर पर भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'श्री मनोहर कोठारी सम्मान' से सम्मानित करते हुए ग्यारह हजार रूपये की सम्मान राशि के साथ अभिनन्दन पत्र, प्रशस्ति पत्र, शाल, अंगवस्त्र एवं श्री फल भेंट किए। उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान उनकी विद्वत्ता एवं समर्पित हिन्दी सेवा के लिए श्रीनाथ मंदिर के मुखिया श्री नरहरि ठाकर एवं निष्पादन अधिकारी ने एक भव्य समारोह में प्रदान किया। अभिनन्दन पत्र के अनुसार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया देश के मूर्धन्य विद्वान, श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, अनेक ग्रन्थों के रचयिता, निर्भीक संपादक, कई संस्थाओं के अध्यक्ष, कमनीय कवि, प्रखर पत्रकार, महान मनन कर्ता, निर्बन्ध-निबन्धकार, स्वार्थरहित समाजसेवी, प्रकृष्ट प्रवचन कर्ता, वैदिक विद्वान एवं अनन्य हिन्दी सेवी हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अनेक शोध प्रबन्ध एवं समीक्षा ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

## वेद प्रचार कार्यक्रम

हम कौन हैं? हमारा जन्म क्यों हुआ है? हमारे क्या-क्या कर्त्तव्य हैं, हमें क्या करना चाहिए एवं क्या नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के समस्त प्रश्नों के उतर वेद में हैं। वेद में समस्त प्रकार का ज्ञान है। हम वेद मार्ग पर चलें एवं वैदिक विचारधारा को अपनाएं। उक्त उद्बोधन आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने भदाना ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आर्य समाज कोटा द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर व्यक्त किए।

## श्रावणी पर्व आयोजित

**आर्य सभा समिति डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आरा** के द्वारा वैदिक परिचर्या सहसंस्कृत दिवस का आयोजन प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष वैदिक परिचर्या का आयोजन हुआ जिसमें कार्यक्रम का उद्घाटन जनपद की प्रतिष्ठित कवयित्री श्रीमती उर्मिला कॉल व आर्य समाज जिलाध्यक्ष एवं प्रचारक श्री कामता प्रसाद आर्य के द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया, कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा श्लोक-पाठ-प्रतियोगिता प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्रीकामता प्र. आर्य ने कहा कि वेद का मूल मन्त्र है समय को पहचानना। प्राचार्या डा. मीरा श्रीवास्तव ने कहा कि "ओ३म की महत्ता को जानना ही जीवन का वास्तविक रहस्य है। आयोजन के द्वितीय दिवस पर वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. गौरी शंकर तिवारी ने संस्कृत सम्भाषण मम देशः भारतवर्ष एवं पर्यावरण सुरक्षा विषय पर छात्रों का कौशल प्रदर्शन देखकर मन्त्र-मुग्ध हो गए। साथ ही विद्यालय के चार सदनों के द्वारा वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। कार्यक्रम के तीसरे दिन पं. वेद निधिशर्मा प्राध्यापक सहजानन्द ब्रह्मर्षि विद्यालय एवं श्रीमती उर्मिला कॉल मुख्यातिथि थी। उन दोनों ने चार सदनों के द्वारा वैदिक "ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मंत्र प्रतियोगिता का अवलोकन कर टैगोर सदन को प्रथम स्थान घोषित किया।

वैदिक परिचर्या का समापन संस्कृत समूहगीत एवं एकलगीत के द्वारा मुख्यातिथि आचार्य भारत भूषण पाण्डेय एवं प्रतिष्ठित समाजसेवी प्रो. कमलानन्द सिंह की अध्यक्षता में हुआ। विद्यालय की प्राचार्या डॉ. मीरा श्रीवास्तव ने आगत अतिथियों का स्वागत सह वैदिक अभिवादन किया। भारत भूषण पाण्डेय ने कहा कि "सुव्यवस्थित ज्ञान को ही संस्कृत कहते हैं" जो डी.ए.वी. की पहचान है। प्रो. कमलानन्द सिंह ने वैदिक एवं लौकिक मन्त्र एवं व्याकरण के अन्तर को स्पष्ट किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी प्रतियोगिताओं में सफल लगभग 85 छात्र-छात्राओं को स्वाध्याय की पुस्तकों से यथा (गीता), (रामायण) पुरस्कृत भी किया गया।

## वैदिक चेतना शिविर

**डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पटना प्रक्षेत्र-1** के तत्वावधान में वैदिक चेतना शिविर **एस.आर.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पूर्णिया** में हवन एवं वैदिक जयघोषों के साथ निदेशक श्री जे.वी. कुलकर्णी ने मुख्य अतिथि श्री एस. के. भारद्वाज, ए.डी.जे. (बिहार पुलिस), श्री विश्वजीत कुमार, विंग कमांडर, वायुसेना, श्री आर्य नरेश एवं अन्य अतिथियों के साथ दीप प्रज्वलित कर शिविर का विधिवत उद्घाटन किया। इस शिविर में पटना प्रक्षेत्र 1 से आये हुए 40 डी.ए.वी. स्कूल के प्राचार्य, आचार्य एवं छात्र-छात्राओं ने बड़े उल्लास से भाग लिया एवं निष्ठापूर्वक शिविर के नियमों व अनुशासन का अनुपालन करते हुए प्रवक्ताओं के प्रवचनों के श्रवण का सुलाभ प्राप्त किया। इस चतुर्दिवसीय शिविर का मुख्य आकर्षण सामूहिक विवाह कार्यक्रम था।

# भव्य वार्षिकोत्सव का निमन्त्रण

हर वर्ष की भांति आर्यसमाज नोएडा इस वर्ष दिनांक 18-22 दिसम्बर 2013 तक भव्य वार्षिक अधिवेशन करने जा रहा है, जिसके अन्तर्गत वेद कथा आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुम्बई व ब्रह्मचारिणी कल्पना एवं मनीषा (गुरुकुल नजीबाबाद) के भजनों का कार्यक्रम होगा। अन्य विद्वानों एवं संन्यासियों के जिसमें गुरुकुल दखौला (मथुरा) के स्वामी विश्वानन्द जी, पातंजलि योगधाम हरिद्वार के स्वामी दिव्यानन्द जी एवं अनेक गुरुकुलों को स्थापित कर वैदिक पताका को फहराने वाले स्वामी प्रणवानन्द जी का भी मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। पण्डित रामप्रसाद 'बिस्मिल' के बलिदान दिवस 19 दिसम्बर को रात्रि में देशभक्ति के गीतों का विशेष कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सम्मिलित होकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

# दक्षिण में आर्य समाज का विस्तार

**आर्य समाज मारतहल्लि, बेंगलोर** ने अपनी स्थापना के मात्र 5 वर्ष बाद सुदूर दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में श्री के.एम. राजन जी के नेतृत्व में, एक नवीन आर्य समाज की स्थापना कर एक और कीर्तिमान स्थापित किया केरल में **''आर्य समाज बेल्लीनैज़ी जनपद पालक्काड** की स्थापना ओणम् के शुभ अवसर पर वैदिक ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्वलित कर की गई। यज्ञ एवं ध्वजारोहण के उपरान्त वरिष्ठ वैदिक प्रवक्ता पं. उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ जी ने आर्य समाज के उद्देश्यों एवं वर्तमान में आर्यसमाज की उपयोगिता पर विस्तार पूर्वक चर्चा प्रस्तुत कर सबको मुग्ध कर दिया। स्वामी आर्य वेश जी ने नवीन आर्य समाज की स्थापना में श्री एस.पी. कुमार एवं श्री के.एम. राजन की भूमिका की सराहना की। नवीन आर्य समाज के मंगलमय भविष्य की कामना के साथ मलयाळम भाषा में लघु पुस्तिका ''स्वर्ग, कार्मो यज्ञेत'' का विमोचन किया।

# वेद सब विज्ञानों और धर्मों का मूल आधार

**श्रावणी महोत्सव पर आर्ष गुरुकुल, नोएडा, (उत्तर प्रदेश)** में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रमों के तहत रविवार को विद्वत गोष्ठी का आयोजन किया गया। इससे पूर्व सुबह आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के निर्देशन में चतुर्वेदशतक पारायण यज्ञ के साथ ही नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराया गया। गोष्ठी के प्रारम्भ में सर्वप्रथम पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की विदुषी आचार्या नन्दिता शास्त्री ने वेदों को लेकर महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। गोष्ठी में आचार्य विरेन्द्र विक्रम ने महर्षि दयानन्द की व्याख्याओं को उद्धृत करते हुए बताया कि ईश्वर, जीव और प्रकृति को ठीक से जानना ही विज्ञान है। इस कसौटी पर सम्पूर्ण विश्व में वेद ही खरे उतरते है। मौके पर शनिवार को आयोजित श्लोकाच्चारण, गीतगायन व भाषण प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। साथ ही आर्ष गुरुकुल नोएडा के मेधावी छात्रों ब्रह्मचारी राजकिशोर, अंकुर व देवेन्द्र को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया।

# सेवाकार्य अभियान

ग्रामीण अंचल के राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में **आर्य समाज जिला सभा कोटा** की सेवा सहयोग कार्यो की शुरुआत करते हुए बुधवार को जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा द्वारा केशवरायपाटन क्षेत्र स्थित ग्राम अणदपुरा के माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं को स्व. चतुर्भुज जी गुप्ता की स्मृति में आर्य समाज द्वारा स्कूल किट व छात्र-छात्राओं की स्कूल यूनिफॉर्म वितरित किए गए। स्कूल किट स्व. चतुर्भुज गुप्ता के पुत्र रामप्रसाद याज्ञिक व पौत्र मनीष गुप्ता ने उपलब्ध कराए थे।

# वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

**आर्य समाज सान्ताक्रुज (पं.) मुम्बई** द्वारा आर्य समाज सान्ताक्रुज के वृहद सभागार में वेद प्रचार समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन ''चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ'' तथा भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। तदनन्तर भजनोपदेशक श्री प्रभाकर शर्मा एवं कुमार योगेश आर्य ने प्रभु भक्ति के गीत प्रस्तुत किए। प्रो. विनय विद्यालंकार जी ने वेद मन्त्रों की सुंदर व्याख्या करते हुए तर्कों प्रमाणों तथ्यों उदाहरणों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। इस अवसर पर उत्तराखण्ड में आयी प्राकृतिक आपदा के सहायतार्थ अब तक एकत्र किए गये तीन लाख रूपये का चैक उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दिया गया।

❑❑❑

हम श्रेष्ठ सुनें, उसे जीवन में अपनायें, जीवन का अंग बनायें, उससे विमुक्त न हों, उससे दूर न हों तथा जीवन को उज्ज्वल बनायें। उक्त उद्बोधन **महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा** द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह ब्राइटलैण्ड स्कूल गायत्री विहार में वैदिक विद्वान सूरजमल त्यागी ने व्यक्त किये। श्री त्यागी ने कहा कि विद्यार्थी जीवन मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ समय है, इसका सदुपयोग करें। मनुष्य जीवन विचारों से बनता है। विद्यार्थी अपने अन्दर से राग-द्वेष कुटिलता रूपी अंधकार को विद्या रूपी दीपक से दूर करें।

# यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

श्रावणी महोत्सव के मौके पर गोवंश संवर्धन ट्रस्ट द्वारा संचालित **आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम ग्राम सोरखा जाहिदाबाद, सैक्टर-115, नोएडा** स्थित परिसर में 11 कुंडीय महायज्ञ के आयोजन के साथ ही 35 ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया।

इस अवसर पर महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने कहा कि वेदों में नारी को पुरुष के समान ही अधिकार दिए गए हैं। यज्ञोपवीत संस्कार कार्यक्रम के पश्चात कम्प्यूटर कक्ष का उद्घाटन श्री राजीव अग्रवाल और श्रीमती छवि अग्रवाल वेलफेयर फाउंडेशन स्टार सिटी माल ने किया और श्री सुधीर कुमार मिड्ढा व श्री राकेश भाटला ने रसोईघर का शिलान्यास किया।

# वार्षिक उत्सव सम्पन्न

**आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना** का वार्षिक उत्सव बड़ी श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया। पं. बालकृष्ण जी के ब्रह्मत्व में मंगल यज्ञ किया गया। उत्सव का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः एवं रात्रि को चला। जिसमें यज्ञ, मनोहर भजन एवं विद्वानों के उत्तम प्रवचन हुए। प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता आचार्य राजू जी वैज्ञानिक ने उत्सव का संदेश देते हुए कहा कि सांसारिक सम्बन्ध सदा नहीं रहते। इसलिए मनुष्य को परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। लुधियाना की सात छात्राओं को बी.ए. फाईनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशि से परितोषिक एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

वे मनुष्य धन्य है जो सत्य, निष्काम भाव से परमात्मा की उपासना करते हैं। न्याय से अर्थात् ईमानदारी से कमाते है। सत्यवादी, सत्यमानी विद्वानों की संगति करते हैं। वे कभी भी दुखों को नहीं भोगते हैं। **- स्वामी दयानन्द**

# वेद प्रचार यात्रा

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए, कप्तान जगराम आर्य के नेतृत्व में ग्राम, गुलावला मेघोत हाला, जैनपुर, मौसमपुर, बिहारीपुर, आर्तरी, छापड़ा, कमानियां, खातौली जाट, खातौली अहीर, धोलेड़ा, बेरूण्डला, चिरागपुरा, मुकन्दपुरा टहला और ताजीपुर में 15 सितम्बर से 22 सितम्बर तक वेद प्रचार सम्पन्न हुआ। अब तक 366 गांवो में वेद प्रचार सम्पन्न हो चुका है। वेद प्रचार करने से मानव मात्र को आर्य समाज के सिद्धान्तों और मान्यताओं की जानकारी होती है। हरियाणा पुलिस से सेवा निवृत थानेदार रामचन्द्र मेघोत हाला निवासी केवल एक बार वेद प्रचार सुनने से आर्य समाजी बन गये और वेद प्रचार दल के सदस्य बन गये। इसी प्रकार ग्राम सहबाजपुर का सरपंच चुन्नीलाल प्रातः से सायं तक शराब पीता था, वेद प्रचार में हवन पर प्रतिज्ञा की कि मैं कभी शराब का सेवन नहीं करूंगा। अब वह बिल्कुल भी शराब नहीं पीते हैं। प्रत्येक गांव में वृक्ष लगवाते हैं। गाय पालने की प्रेरणा देते हैं। भ्रूण हत्या बन्द कराते हैं। युवाओं को ब्रह्मचर्य धारण कर नैतिक शिक्षा देते हैं।

प्रतिदिन दो विद्यालयों में जाकर वेद प्रचार करते हैं। रात्रि 8 से 10 बजे तक पारिवारिक सत्संग करते हैं। वृद्धों को सम्मान दिलाते हैं। अज्ञान, अन्धकार, ढोंग प्रचार से समाप्त किया जा सकात है। आज भारत की दुर्दशा नकली भगवानों के कारण ही है। सर्वव्यापक को एकदेशी मानना भगवान की निंदा है। जो वेद-विरुद्ध क्रियायें करते हैं वे सब नास्तिक हैं। नारी जाति को एक नई ज्योति व प्रेरणा देते हैं। हजारों बहनों को प्रेरणा मिली है। आज से आठ सौ वर्ष पूर्व हमारे देश में तम्बाकू का प्रचलन नहीं था। वास्कोडिगामा पुर्तगाल से भारत में तम्बाकू का पौधा लाया। आज कोई बीड़ी, कोई सिग्रेट, कोई हुक्का और चिलम पी रहे हैं। बहु सारे तम्बाकु खाने भी लग गये हैं, इसके कारण पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। भाई मैकाले ने आर्ष शिक्षा गुरुकुल प्रणाली को समाप्त करके अंग्रेजी स्कूल खोले और सह शिक्षा का लागू कर दिया। औरंगजेब ने आर्य संस्कृति को नष्ट करने के लिए वैदिक पुस्तकालयों में आग लगाई। तलवार की नोक पर आर्यों की चोटी काटी और यज्ञोपवती उतरवाई। अफ्रीका के जंगलों से इस देश में भैंस लाई गई जिससे लोगों की बुद्धि मलिन हो गई। बोपदेव ने पुराणों में गप्पोड़े लिखे जिससे जनता भ्रमित हो गई। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि पुराण लिखने वाला माँ के गर्भ में ही नष्ट हो जाता तो इतना पाखंड नहीं बढ़ता। वेद प्रचार में सहयोग देने वाले कप्तान जगराम आर्य, पं. रमेश शास्त्री, मास्टर अमृतलाल, थानेदार रामचन्द्र, बलदेव, महाशय फूलचंद, लक्ष्मी नारायण आदि हैं।

–संचालक वेद प्रचार यात्रा

# यज्ञ, भजन, प्रवचन अभिनन्दन समारोह

**यज्ञ समिति झज्जर** के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में **आर्य समाज झज्जर** के उपप्रधान महाशय रतीराम आर्य के संयोजकत्व में यज्ञ-भजन-प्रवचन अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में बच्चों को निम्नलिखित संकल्प दिलवाएं-प्रतिदिन कम से कम 5 मिनट के लिए अवश्य ही ईश्वर की उपासना करना, माता-पिता जी, दादा-दादी माँ, आदि सज्जनों के चरणों का स्पर्श करके अभिवादन करना, मातृभाषा हिन्दी में हस्ताक्षर करना, गौदुग्ध का सेवन करना, अन्धविश्वास-पाखण्ड में नहीं फसना, गाली-ग्लोच नहीं देना, चाय, कोल्ड-ड्रिंक्स आदि हानिकारक पदार्थो का सेवन नहीं करना। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. धर्मवीर जी आर्य खेड़ी आसरा ने आर्य समाज के दस नियमों को राजनैतिक-उन्माद निवारक औषध बताया।

# धर्म शिक्षक उपलब्ध

राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर ने अपने से सम्बन्धित विद्यालयों में 5 धर्म शिक्षकों की पूर्ति के लिए शास्त्री/आचार्य, बी.एड. किये हुए 10 व्यक्तियों को चुन कर उन्हें लगभग 2 माह का वैदिक सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्यक्रम 13 अक्टूबर से आरम्भ कर दिया है। यह प्रशिक्षण तपोवन-देहरादून, ऋषि उद्यान अजमेर व वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़-गुजरात में दिया जायेगा। इसका समापन 7 दिसम्बर 2013 को बीकानेर में होगा। इन 10 व्यक्तियों में से 5 का चयन बीकानेर हेतु व 1 का चयन कनार्टक हेतु होगा। शेष 4 धर्म शिक्षक सेवा के लिए उपलब्ध रहेंगे। यदि आर्यसमाज के किसी विद्यालय को धर्म शिक्षक की आवश्यकता हो तो अपने विवरण व प्रस्ताव को rsvjnv@gmail.com पर ईमेल द्वारा प्रेषित करें। इस विषय में पूछताक्ष के लिए सम्पर्क करें-09687941778, समय सायं 4 से 5 के मध्य।

# वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक सम्पन्न

**राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय टिपटा कोटा** में आर्य समाज के वेद प्रचार सप्ताह समापन के अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति संस्कृत पर आधारित है और संस्कृत का मूल आधार वेद हैं। वेद का अध्ययन ही हम सबका मुख्य कर्तव्य है तथा संस्कृत भाषा के अध्ययन का यही सबसे बड़ा उद्देश्य है। छात्रों को शास्त्री एवं आचार्य में वेद विषय अवश्य लेना चाहिए। शास्त्री जी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जीवन वेदों से प्रेरित रहा, वे वेदों में वर्णित धर्म की संस्थापना करना चाहते थे। गीता में वर्णित कर्म के संदेश का मूल वेद ही हैं।

## टंकारा समाचार **के प्रसार में सहयोग दें**

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

**'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।**

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

( पृष्ठ 17 का शेष )

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो, इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।।

**रेकी सीखने-सिखाने तथा उपचार करने की पात्रता-**

कोई भी व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, किसी भी आयु में रेकी सीख सकता है तथा रेकी द्वारा उपचार कर सकता है। रेकी सीखना और रेकी द्वारा उपचार करना इतना सरल है कि छोटा बच्चा भी इसे सीखकर लाभ उठा सकता है। रेकी का सम्बन्ध किसी भी राष्ट्र, धर्म अथवा संप्रदाय से नहीं है। अत: किसी भी धर्म, सम्प्रदाय अथवा विचारधारा को मानने वाला व्यक्ति रेकी ऊर्जा के उपयोग से लाभान्वित हो सकता है।

कुछ लोग रेकी से पूर्णरूप से लाभान्वित नहीं हो पाते, क्यों?

कारण है विश्वास की कमी या सीमित विश्वास। श्रद्धा और समर्पण का अभाव, संशय की प्रधानता, अभ्यास में शिथिलता। कहा गया है कि "श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्" तथा ''संशयात्मा विनश्यति''।

कहने का अर्थ ये है कि जब तक संशय का दौर समाप्त नहीं होगा तब तक हम किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते। श्रद्धा, समर्पण तथा असंशय या संशय रहित होने के साथ-साथ जीवन में स्थितियों और घटनाओं को स्वीकारना भी महत्वपूर्ण हैं। जितना अधिक हम वाद-विवाद में उलझेंगे, तर्क-वितर्क या कुतर्क करेंगे उतना ही आध्यात्मिक ऊर्जा से वंचित रहेंगे। परिणाम की चिन्ता भी बेमानी है। जैसे ही हम परिणाम की चिन्ता में ग्रस्त होते हैं, हमारा आध्यात्मिक स्तर कमजोर पड़ जाता है। जीवन शक्ति के प्रवाह में रुकावट आती है।

कर्ताभाव का त्याग करके निष्काम कर्म तथा नि:स्वार्थ प्रेम की महत्ता सभी ने स्वीकार की है। एक रेकी साधक को भी इन पर आचरण करना चाहिए। रेकी की सुचारुता में वृद्धि हो इसके लिए रेकी के प्रथमाचार्य डॉ. मिकाओ उसुई ने रेकी के पाँच सैद्धांतिक नियम बनाए हैं। प्रत्येक रेकी साधक को इन का पालन करना चाहिए।

रेकी के पाँच सैद्धांतिक नियम-

1. Just for today don't worry.
2. Just for today don't anger.
3. Earn your living honestly.
4. Show gratitude to everything.
5. Respect your elders, teachers & parents and lover your youngers.

इन सिद्धान्तों का पालन करना रेकी उपचार में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है। रेकी के इन पाँचों सिद्धान्तों को आत्मसात् किया जा सके इसके लिए मैंने इन्हें निम्नरूप में प्रस्तुत किया है-

1. आज मैं पूर्णरूप से प्रसन्न हूँ।
2. आज मैं प्रेम से परिपूर्ण हूँ।
3. मैं ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाता हूँ।
4. मैं हर वस्तु और स्थिति के लिए कृतज्ञ हूँ तथा प्रत्येक स्थिति को यथावत् स्वीकार करता हूँ।
5. मुझे हर वस्तु में श्रद्धा तथा विश्वास है तथा मैं अपने माता-पिता, गुरुओं तथा सभी बड़ों का आदर करता हूँ एवं सभी छोटों को प्यार करता हूँ।

मैं अपने रेकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपरोक्त नियमों को आत्मसात् कराने का प्रयास करता हूँ।

रेकी में इन सिद्धान्तों का वही स्थान है जो 'योग' में यम और नियम का। योग के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि। मात्र आसन करना संपूर्ण योग नहीं है। यम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह व नियम अर्थात् शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान इनके बिना योग अधूरा है। इसी तरह रेकी में उपरोक्त पाँच सिद्धान्तों का आत्मसात् करना उचित तथा अनिवार्य है।

**क्या रेकी के साथ अन्य चिकित्सा-पद्धति भी अपनाई जा सकती है?**

उत्तर है-अवश्य।

यदि रोगी का एलोपैथी या अन्य चिकित्सा पद्धति से इलाज चल रहा हो तब भी उसको रेकी दी जा सकती है और देनी भी चाहिए। रेकी से ऊर्जा के स्तर में वृद्धि तथा ऊर्जा का संतुलन होने से दवाओं का असर अपेक्षाकृत शीघ्र और ज्यादा होता है। दवाओं की मात्रा क्रमश: कम होती चली जाती है। यदि रोगी को दी जाने वाली दवा और भोजन को रेकी दी जाए तो उसके परिणाम भी बहुत अच्छे होते हैं। स्वास्थ्य-लाभ शीघ्र सम्भव होता है। वैसे भी रेकी आध्यात्मिक ऊर्जा है। इसमें प्रार्थना का तत्व भी समाहित है। आप सब जानते हैं कि 'प्रार्थना' अपने आप में एक उपचारपद्धति है। प्रार्थना अपने इष्टदेव से की जाती है। 'रेकी' ईश्वर का ही दूसरा नाम है, अत: 'रेकी' के माध्यम से प्रार्थना का भी उतना ही प्रभाव है। दूरस्थ उपचार अथवा Distant Healing क्या है। रेकी के माध्यम से प्रार्थना ही तो है। अन्तर इतना है कि इसमें रेकी प्रतीक चिन्हों की मदद ली जाती है। वैसे आप ने एक डायलॉग सुना होगा-''दवा जो काम कर सकती थी कर चुकी, अब बस दुआ कीजिए'' और आपने दुआओं का असर होते भी देखा होगा। तो फिर क्यों न दवाओं के साथ भी और दवाओं के बिना भी जहाँ तक सम्भव हो रेकी का उपयोग प्रारम्भ कर दें। रेकी ऊर्जा आप सब के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे, इसी कामना के साथ!

-AD/19 A, प्रीतमपुरा, दिल्ली-110088

( पृष्ठ 1 का शेष )

महर्षि क्या थे। एक वाक्य में वह सब थे जो कोई दूसरा नहीं था।

वह सच्चे योगी राज, वेदज्ञ, अखण्ड ब्रह्मचारी, देश का भक्त, निर्भीक, गुरु भक्त, परोपकारी, सत्यवादी तथा दयालुता की प्रतिमा थे महर्षि गुणों की खान थे, सद्गुणों ने उन्हें अपना निवास स्थान बना रखा था वह सद्गुणों के संगम थे।

महापुरुषों का जीवन वह दीप्तिस्तम्भ है जो राह से भटके लोगों को कुमार्ग से हटा कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उन के पावन देहावसान के अवसर पर संकल्प करें कि उन के निर्देशानुसार सच्चे मानव बनने का प्रयत्न करेगें जो समय की मांग है। आज आर्यसमाजियों की वस्तु-स्थिति पर व्यंग करते हुए किसी ने सही लिखा है-

**सूक्त संगठन के पढ़ के बिखरते रहे।**
**पाठ शान्ति का पढ़ के झगड़ते रहे।**
**गैर को न अपना बना ही सके।**
**अपनों से बिछुड़ने से क्या फायदा।।**

प्रति वर्ष दीपावली पर्व आता है और चला जाता है परन्तु महर्षि का निर्वाण दिवस जन जीवन में नव ज्योति का संचार कर जाता है। इसे स्वीकार करें। यही होगी उस महामानव को सच्ची श्रद्धांजली।

# टंकारा में ऋषि बोधोत्सव के लिए निमंत्रण

## ( 26 फरवरी से 28 फरवरी, 2014 )

मान्यवर/मान्या, सादर नमस्ते।

ऋषि जन्मभूमि, टंकारा में आगामी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) का आयोजन समारोहपूर्वक किया जा रहा है। आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें। 21 फरवरी 2014 प्रात: को 1 मार्च 2014 प्रात: तक अपना बहुमूल्य समय इस कार्यक्रम के लिए रखें। आर्य समाज के विचारों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा, प्रेम, प्यार, उत्साह को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। आपकी टंकारा यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो, यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। ध्यान रहे आप महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली की यात्रा करने जा रहे हैं, आप अपने त्याग, सहयोग, उत्साह को इस काल में बनाये रखें। यात्रा रेल द्वारा होगी। इस बार हमने गांधीधाम भुज (कच्छ) की यात्रा करने का भी मन बनाया है। खान-पान, ठहरने का प्रबन्ध उचित करने का पूरा प्रयत्न होगा, फिर भी आपके मन के अनुकूल न हो, कहीं कमी का अनुभव हो तो चर्चा का विषय न बनायें।

वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर है, गाड़ी में रियायत लेने वाले मूल आयु प्रमाण-पत्र साथ रखें। टंकारा में मौसम थोड़ी गर्मी का होगा, लगभग यहाँ के अप्रैल-मई की तरह। अत: हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की साम्रगी, पीने का पानी और दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें। सामान उतना साथ लें जो आप स्वयं उठा सकें। अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें। कीमती सामान, धनराशि साथ न रखें। गर्म कपड़ों में आप स्वेटर, शॉल, ओढ़ने के लिए चद्दर साथ रखें।

आर्य समाज सम्बन्धी धार्मिक भजन बोलने वाले भाई-बहन भजनों की कापी साथ रखें।

### कार्यक्रम

- ❑ दिनांक 21 फरवरी, 2014 (शुक्रवार) को आला हजरत (बरेली एक्सप्रैस) गाड़ी नं. 14311 द्वारा रवाना होंगे। यह गाड़ी पुरानी दिल्ली से 11:30 बजे चलकर सराय रोहिल्ला होती हुई दिल्ली कैण्ट 12:10 पर आती है। आप स्टेशन पर आधा घण्टा पहले पहुँचने की व्यवस्था करें। दोपहर का भोजन साथ लायें। रात्रि का भोजन गाड़ी में होगा।
- ❑ दिनांक 22 फरवरी, 2014 (शनिवार) को दोपहर 12 बजे तक गांधीधाम (भुज) पहुँच जायेंगे। दोपहर का भोजन गांधीधाम में होगा। भोजन तथा रहने की व्यवस्था वहाँ की आर्य समाज द्वारा होगी। [गांधीधाम (भुज) वह स्थान है जहाँ 26 जनवरी, 2001 को भयंकर भूकम्प आया था। गणतंत्र दिवस मनाते हुए सैंकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। सैंकड़ों बच्चे अनाथ हो गये थे। उन अनाथ बच्चों के खाने, कपड़ा, पढ़ाई आदि की सारी जिम्मेदारी आर्य समाज गांधीधाम ने ले रखी है।]
- ❑ दिनांक 23-24 फरवरी, 2014 (रविवार, सोमवार)- इन दो दिनों में वहां के महामन्त्री की सलाह से गांधीधाम, भुज तथा अन्य स्थानों का भ्रमण विशेष बस द्वारा होगा।
- ❑ दिनांक 25 फरवरी, 2014 (मंगलवार)-गांधीधाम में प्रात: नाश्ता लेकर बस द्वारा टंकारा के लिए रवाना होंगे।
- ❑ दिनांक 25 से 27 फरवरी, 2014 (मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार)- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम में मनाया जायेगा। इस दौरान आवास तथा भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।
- ❑ दिनांक 28 फरवरी, 2014 (शुक्रवार)-टंकारा में प्रात: नाश्ता करके टैक्सी द्वारा राजकोट स्टेशन के लिए रवाना होंगे। राजकोट से उत्तरांचल एक्सप्रैस (गाड़ी नं. 19565) द्वारा 12:20 बजे दोपहर को दिल्ली के लिए रवाना होंगे। दोपहर तथा रात्रि के भोजन आदि का प्रबन्ध गाड़ी में किया जायेगा।
- ❑ दिनांक 1 मार्च, 2014 (शनिवार)-ईश्वर का धन्यवाद करते हुए दिल्ली कैण्ट होते हुए प्रात: 10:30 बजे पुरानी दिल्ली पहुँच जायेंगे।

**विशेष:-** ध्यान रहे कि गांधीधाम तथा टंकारा में ठहरने के लिए पहले से प्रबन्ध करना होगा तथा रेलगाड़ी की बुकिंग भी पहले से करानी होगी, इसलिए अपने नाम सोच समझकर शीघ्रातिशीघ्र दे दें। अगर कोई भाई-बहन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पहले हमें अवश्य सूचना दे दें। कम-से-कम कटौती के बाद उसका पैसा लौटा दिया जायेगा।

**अनुमानित व्यय:-** II Sleeper : साधारण-2,800 रु.; वरिष्ठ नागरिक पुरुष-2,500 रु.; वरिष्ठ नागरिक महिला-2,400 रु.। 3-Tier AC: साधारण-4,400रु.; वरिष्ठ नागरिक पुरुष 3,500 रु.; वरिष्ठ नागरिक महिला-3,300 रु.। यह व्यय No-Profit No- Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने-पीने ठहरने, गाड़ी का किराया आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 15 दिसम्बर, 2013 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करवा दें। रेलवे टिकट की बुकिंग में परेशानी को देखते हुए इच्छुक भाई-बहन अपनी राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी-बहुत तब्दीली हो सकती है।

**विशेष:** दिल्ली कैण्ट स्टेशन पर सभी गाड़ियाँ रुकती हैं। वहीं से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते है।


**महेन्द्र प्रताप साहनी**

C-4Fèk239 जनकपुरी, नई दिल्ली, मोबाइल न. 9311357493

ऊषा अरोड़ा/राम चन्द अरोड़ा

C-5Aèk216 जनकपुरी, नई दिल्ली, मोबाइन न. 9910650690, 011-25521814


> वे मनुष्य दु:ख सागर से तर जाते हैं, जो माता-पिता, गुरु, विद्वान, सदाचारी, संत, गरीब, रोगी, अनाथ आदि की सेवा करते हैं और वेद, उपवेद, दर्शन शास्त्र, उपनिषद् आध्यात्मिक शास्त्रों को पढ़ते हैं तथा पढ़ाते हैं। ईश्वर की उपासना करते हैं और सत्य व्यवहार करते हैं। **- स्वामी दयानन्द**


**टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर**

**श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**

**www.tankara.com पर उपलब्ध है**

## आर्य समाज ( अनारकली ) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

# ८९वां वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियां

*Everybody says,*
*"mistake is the first step of success"*
*but the real fact is,...*
*"correction of mistake is the*
*first step of success"*

टंकारा समाचार नवम्बर, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2013
R.N.I. No 68339/98

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय